समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

Postal R.No. UA/DO/16/2015-2017, RNI-NO.38653/80

युग क्रान्ति वर्ष 2016-2017 विचार क्रान्ति अभियान

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक-संरक्षक : युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 अप्रैल 2017
वर्ष-29, अंक-19
प्रकाशन स्थल : शांतिकुंज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 मार्च 2017

E-mail: news.shantikunj@gmail.com, news@awgp.in

वार्षिक चंदा ₹ 40/- विदेश में ₹ 500/- प्रति अंक ₹ 2/-

2 सम्पादकीय
जनमानस जाग्रत् हो रहा है, यह तथ्य और इसका महत्त्व समझें
राजनैतिक, धार्मिक और सामाजिक नेता अपनी दिशाधारा बदलें

श्रद्धा, समर्पण, सहकारी व्यवस्थाओं का अद्भुत प्रयोग दण्डकारण्य 108 कुण्डीय वनांचल शांति, समृद्धि महायज्ञ
3

4
मुट्ठीभर युवाओं ने शुद्ध कर दिया माँ नर्मदा का आँचल

पूर्वोत्तर का प्रकाश स्तम्भ-गायत्री चेतना केन्द्र गुवाहाटी की प्राण प्रतिष्ठा हुई 6

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में निखर रहा है युग सृजेताओं का व्यक्तित्व 7

शांतिकुंज में होलिका दहन एवं होली मिलन समारोह
8

षड्रिपुओं का दुःखदायी बंधन

युग परिवर्तन का एकमात्र उपाय

हीन वृत्तियों से उबरें, श्रेष्ठ वृत्तियाँ उभरें

सभी चाहते हैं कि वर्तमान परिस्थितियाँ बदलें, व्यक्ति देवत्व का वरण करे और धरती को स्वर्ग तुल्य बनाये। पर यह तथ्य अपनी जगह अडिग रहेगा कि युग बदलने का कार्य आत्मिक पुरुषार्थ के बल पर स्वयं अपने को बदलकर ही सम्भव है। दुश्चिन्तन, भ्रष्ट आचरण, अन्याय, लोभ, मोह और अहंकार व्यक्ति और समाज को जकड़े हुए हैं, जब तक मानव में अवतरित होने वाली दैवी सत्ता इनसे संघर्ष नहीं करती तब तक नवनिर्माण की बात कल्पनालोक तक ही सीमित रहेगी।

यह तथ्य भली-भाँति समझा जाना चाहिए कि सुखी, सन्तुष्ट और समुन्नत बनने का राजमार्ग एक ही है कि लोभ-मोह की उन अनियन्त्रित लिप्साओं पर अंकुश लगाया जाय जो अपने साधनों में सन्तुष्ट न रहकर कभी कर्ज माँगती हैं, कभी सहायता के लिये पल्ला पसारती हैं कभी अनैतिक उपार्जन के लिए प्रेरणा देती हैं और अन्ततः तृष्णा की पूर्ति असम्भव रहने पर खुद को कोसने पर विवश कर देती हैं। नरक का वरण इसी को कहते हैं। भव बन्धन यही है कि जो लोभ-मोह के पक्षधर स्वार्थ-साधन आरंभ में तो निर्दोष दिखते हैं, वहीं जब उनकी विषबेल बढ़ती है तो कण्टकों से लेकर दुर्गन्ध एवं कडुवाहट से सारा वातावरण विपन्न बनाकर रख देते हैं।

इस कुचक्र को उलटा जाना चाहिए। आकांक्षाओं का नये सिरे से निर्धारण करना चाहिए। विलास-वैभव की, ठाठ-बाट की, अमीरी और पदवी धारण की लिप्सा अन्ततः जीवन की सार्थकता में किस प्रकार अवरोध उत्पन्न करती है, किन-किन कण्टकाकीर्ण झाड़ियों में भटकाती है, इस पर दूरदर्शितापूर्ण चिन्तन होना चाहिए। यदि ऐसा बन पड़े तो तत्काल महत्त्वाकांक्षाओं का दूसरा नन्दनवन दीखने लगेगा, जिसमें आदि से अन्त तक सत्परिणामों का शीतल सुगन्धभरा वातावरण और फल-फूलों से लदा वैभव ही चारों ओर परिभ्रमण करता है।

परिवार को समर्थ बनाया जाय

अपने देश में परिवार पोषण की चिन्ता गृह संचालकों को खाती, निचोड़ती रहती है। इसमें दोष परिवार संस्था का नहीं उसके संचालन में बरती गई मूढ़ता का है, जिसने उसके सदस्यों को आलसी, अपव्ययी बनाकर ऐसी गई-गुजरी स्थिति में लाकर पटक दिया है जिससे आपाधापी, खींचातानी और अवज्ञा, उद्दण्डता के अतिरिक्त और कुछ उपजने की सम्भावना ही नष्ट हो गई है।

वृक्ष, वनस्पतियाँ तक परोपकार करते रहते हैं। पशु-पक्षी भी विश्व-वैभव को बढ़ाने और दूसरों की सहायता करने में समर्थ रहते हैं। फिर कोई कारण नहीं कि मनुष्य वैसा कुछ न कर सके। सच तो यह है कि स्रष्टा ने मानवी सत्ता की संरचना ही इस प्रकार की है कि वह शरीर यात्रा की व्यवस्था कुछ घण्टे के श्रम एवं कौशल के सहारे जुटा सके।

परिवार एक सहकारी संस्था है। उसमें कुछ पर खर्च करना पड़ता है तो कुछ कमाऊ भी होते हैं। गाय कमाऊ होती है और बच्चा कुछ खर्च कराता है। दोनों के साथ रहने पर भी अन्ततः उनकी समन्वित सत्ता हर दृष्टि से लाभदायक ही सिद्ध होती है।

परिवार का गठन यदि इसी दूरदर्शितापूर्वक किया जाय, उसमें शालीनता का वातावरण एवं प्रचलन जमाया जाय तो कोई कारण नहीं कि परिवार संस्था अपने पैरों पर खड़ी न हो और सभी सदस्यों के लिए सुखद न बन सके। परिवार भार तब बनता है जब उसके सदस्यों को अपाहिज, अहंकारी, विलासी एवं पराश्रयी रहने की कुसंस्कारिता का मन्द विष आरम्भ से पिलाना शुरू कर दिया जाता है। जापान, इस्राइल, युगोस्लाविया, जर्मनी, स्विट्जरलैण्ड, रूस आदि देशों के परिवारों का पर्यवेक्षण करने पर प्रतीत होता है कि वे किसी गृहपति की गर्दन पर लदे नहीं होते। सहकारी श्रमशीलता अपनाकर वे न केवल आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी बने रहते हैं वरन् इस परम्परा के अन्तर्गत अनेक सदस्य मानवी सद्गुणों के अभ्यस्त बने रहते हैं।

जाग्रत् आत्माओं की रीतिनीति

बहुसंख्यक लोग जिस मार्ग पर चलते हैं उसी पर जायें, यह आवश्यक नहीं। अंधी भेड़ें गड्ढे में गिरती चली जाती हैं। जो समझदार हैं, वे क्यों गिरें? हाथ-पाँव छोड़कर बहाव में बहने लगने से तो निचाई वाले गर्त में ही पहुँचा जायेगा। ऐसे में तैरकर पार जाने या उलटकर ऊँचाई की ओर चल पड़ने की बात क्यों न सोची जाय?

चिर अतीत में स्वल्प साधनों में स्वर्गीय वातावरण, सतयुग चलता चला जाता तो आज की सर्वतोमुखी समर्थता, सम्पन्नता के रहते प्रस्तुत परिस्थितियाँ उतनी ही सुखद होतीं जिन पर तथाकथित दिव्य लोकों को सहज ही निछावर किया जा सकता। किन्तु कुचाल तो कुचाल ही ठहरी। कुचक्र तो कुचक्र ही है। इस दुर्भाग्य को क्या कहा जाय? अवांछनीयता प्रचलनों के रूप में लोगों की दुर्बल मनःस्थिति पर इस बुरी तरह हावी हो गयी हैं कि निरीह जनसमुदाय उनसे आत्मरक्षा कर सकने के लिए पुरुषार्थ करना तो दूर, सोचने तक में समर्थ नहीं हो पा रहा है।

सद्ज्ञान के इस आलोक की प्रथम किरण जागृत आत्माओं के, प्राणवान व्यक्तियों के अन्तराल में इस प्रकार चमकनी चाहिए कि वे अपनी स्थिति का पर्यवेक्षण करें और औचित्य-अनौचित्य का वर्गीकरण करके उनमें से उपयोगी का चयन करने का साहस जुटा सकें। यह शुभारम्भ इस निर्धारण के साथ होना चाहिए कि आकांक्षाओं को मोड़ा-मरोड़ा जायेगा। औरों से उपलब्ध करने की ललक और अनावश्यक अपव्यय की लिप्सा पर नियन्त्रण किया जायगा। रिक्तता न आने पावे, इसलिए उसके स्थान पर पारमार्थिक महत्त्वाकांक्षा को उससे भी अधिक तीव्रता के साथ जगाया जायेगा, जितना कि तृष्णाएँ, ऐषणाएँ उमगती-उफनती थीं।

देने की आकाँक्षा का उभार ही देव परम्परा है। भारत के तैतीस कोटि नागरिक इसी को चिरकाल तक अपनाये रहे और इस धरती को स्वर्गीय वैभव से सुसम्पन्न बनाए रहने का श्रेय पाते रहे। पुनर्निर्माण की प्रभात बेला समाने है। तमिस्रा से उभरने और आलोक-आभा का वरण करने के इस पावन पर्व पर अग्रदूतों के निजी निर्धारण यह होने चाहिए कि वे याचना का हिजड़ापन छोड़कर उदार अनुदानों के अधिष्ठाता बनने के लिए साहस जुटाएँ। इसके लिए संचित कुसंस्कारिता के अभ्यस्त ढर्रे को बदलने-सुधारने की हिम्मत जुटानी होगी।

श्रेष्ठता की ओर कदम बढ़ायें

'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' का उद्घोष अकाट्य तर्कों-तथ्यों से भरा है। उस नीति को अपनाए बिना और कोई चारा नहीं। युग परिवर्तन के लिए जिस आत्म-परिवर्तन की आवश्यकता है उसका शुभारम्भ, श्री गणेश इस प्रकार होना है कि अमीरी के सपनों को विदा करें और शालीनता की रीति-नीति अपनाने की आत्म-निर्भरता का संकल्पपूर्वक वरण करें। पिछला कदम उठाना और अगला कदम बढ़ाना ही प्रगति क्रम है, दोनों का समन्वय हुए बिना बात बनती ही नहीं।

अवांछनीयता छोड़ देना भर पर्याप्त नहीं। तत्परता को कोई दूसरा काम चाहिए और वह एक ही हो सकता है-सृजनात्मक सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन में संलग्नता। दोनों परस्परपूरक हैं। इसमें से किसी एक को अपनाना और दूसरे को छोड़ सकना किसी भी प्रकार सम्भव नहीं, जो सेवाधर्म तो अपनाना चाहते हैं और तृष्णाओं से आकुल मनःस्थिति को बदलना नहीं चाहते, उनका मनोरथ पूरा हो ही नहीं सकेगा। या तो तृष्णाओं की व्यस्तता में समय ही नहीं निकलेगा या फिर उन सेवाकृत्यों में ही स्वार्थ-साधन के ऐसे उपाय ढूँढ़ने में लगे रहेंगे, जिनके कारण उल्टे परिणाम निकलेंगे। सेवा, सेवक और योजना तीनों ही समान रूप में बदनाम होंगे।

'सादा जीवन-उच्च विचार' का सिद्धान्त शत-प्रतिशत सही है। जो उच्च विचारों को वरण करना चाहते हैं, श्रेय पथ पर चलना चाहते हैं, उन्हें सादगी अनिवार्यतः अपनानी पड़ेगी। अन्यथा लिप्सा-लालसाओं के अन्धड़ में उच्चविचार मात्र कल्पना भर बने रहेंगे, चरितार्थ होने की दिशा में दो कदम भी आगे बढ़ न सकेंगे। बढ़ेंगे तो इतनी थकान और कठिनाई अनुभव करेंगे कि जो सोचा था उसे छोड़ बैठने के अतिरिक्त और उपाय बचेगा ही नहीं। उत्कृष्टता अपनाने की बात वहीं से आरम्भ होती है जहाँ से व्यक्तिगत लोभ-मोह पर, तृष्णा-अहंता पर, लिप्सा-लालसा पर अंकुश लगाने और प्रगति को, सफलता के केन्द्र बिन्दु-परमार्थ प्रयोजनों के साथ जोड़ने का निश्चय-निर्धारण किया जाता है। इतना बन पड़े-सध सके तो समझना चाहिए कि स्थिति में कायाकल्प जैसा हेरफेर हो गया। भिखारी का, पराश्रयी का, उद्विग्न असन्तुष्ट का स्तर उलटकर महामानवों जैसा देव जीवन अभीष्ट हो तो उपरोक्त मार्ग पर चलने के अतिरिक्त और कोई मार्ग है नहीं।

वाङ् मय खण्ड-'अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व', पृष्ठ 14.29 से संकलित-संपादित

नवसंवत्सर-2074
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, दिनांक 28 मार्च 2017
के संदर्भ में
हमारी प्रार्थना

हे प्रभु! हमारी साधना को इतनी सशक्त, समर्थ बनायें कि हम देव संस्कृति के दिव्य-अक्षय सूत्रों को जनजीवन में प्रविष्ट कराके विश्व को उज्ज्वल भविष्य के लक्ष्य तक पहुँचाने में उल्लेखनीय योगदान देकर अपने जीवन को धन्य बना सकें।

अखिल विश्व गायत्री परिवार
शांतिकुंज, हरिद्वार

जनमानस जाग्रत हो रहा है, यह तथ्य और इसका महत्त्व समझें

राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक नेता अपनी दिशाधारा सँभालें

परिवर्तन का प्रचण्ड प्रवाह

युगऋषि ने घोषित किया कि युग परितर्वन का प्रबल चक्र चल पड़ा है। वह क्रमशः तीव्र से तीव्रतर होता जायेगा। परिवर्तन की यह प्रक्रिया द्रष्टाओं को तो बहुत पहले से दिखने लगी थी। अब परिवर्तन का वह चक्र सामान्य जीवन क्रम में भी दिखाई देने लगा है। समझदारों को उस प्रवाह की दिशाधारा समझते हुए जीवनक्रम को उसी के अनुरूप ढालने के प्रयास करने चाहिए। जो समझदारी का परिचय देते हुए उसके अनुरूप ढलने का प्रयास करेंगे, वे लाभ में रहेंगे। जो लोग पूर्वाग्रह से चिपके रहने के प्रयास करेंगे, उन्हें प्रचण्ड काल-प्रवाह रौंदता हुआ आगे बढ़ जायेगा। समय-समय पर युगऋषि द्वारा दिए गये उदाहरणों से यह बात स्पष्ट हो जाती है।

पौराणिक काल ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। वामन अवतार के क्रम में राजा **'बलि'** ने उस संकेत को समझ लिया। गुरु शुक्राचार्य के रोकने पर भी उन्होंने विवेकपूर्वक नीति का अनुसरण किया तो वे श्रेष्ठ यश और सद्गति के अधिकारी बने। रामावतार के क्रम में **विभीषण** ने विवेक को अपनाया और रावण अपने मोहग्रस्त दुराग्रह पर अड़ा रहा, परिणाम सभी के सामने है। कृष्णावतार के समय **ग्वालबालों** ने विवेकपूर्ण साहस दिखाया तो प्रचण्ड आसुरी शक्तियाँ भी उनका कुछ न बिगाड़ सकीं।

ऐतिहासिक उदाहरण भी कम नहीं हैं। अमेरिका में दासप्रथा चरम पर थी। उससे मनुष्यता कलंकित हो रही थी। उस कलंक को निरस्त करने के लिए दैवी प्रवाह उमड़ा। सत्ताधारी और धनसम्पन्न वर्ग दास प्रथा को बनाये रखना चाहता था। लेकिन काल प्रवाह ने अपना असर दिखाया। एक गरीब परिवार का व्यक्ति (**अब्राहम लिंकन**) राष्ट्रपति बन गया, एक गृहणी (**हैरियत स्टो**) ने उपन्यास 'टॉम काका की कुटिया' (अंकल टॉम्स कैबिन) लिखी। अमेरिका में गृहक्रान्ति हो गयी और उस प्रचण्ड आँधी ने दास प्रथा को उखाड़ फेंका। इसी तरह भारत से अंग्रेज शासन समाप्त हो गया।

वर्तमान समय में युगऋषि की महाक्रान्ति का प्रवाह चल रहा है। इस बार दैवी योजना का लक्ष्य क्षेत्रीय नहीं, वैश्विक है। किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं, समग्र मानवता के लिए उज्ज्वल भविष्य की संरचना होनी है। इसलिए प्रज्ञावतार की परिवर्तन प्रक्रिया व्यापक स्तर पर चल पड़ी है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत जाग्रत आत्माओं के द्वारा जनचेतना को जाग्रत करने का महत्त्वपूर्ण क्रम प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष दोनों स्तरों पर अपनाया जा रहा है।

जनशक्ति की गरिमा

जनसामान्य को पिछले दिनों अशक्त निरीह वर्ग की तरह माना जाता रहा है। लेकिन इस प्रकार की सोच अज्ञान, अविवेकजनित ही कही जा सकती है। युगऋषि ने उसे आधारभूत शक्ति माना है। जनतंत्र के इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए श्रीराम चरित मानस में लिखा है-

चौदह भुवन एक पति होई, भूतद्रोह तिष्ठइ नहिं सोई॥

अर्थात्-चौदहों लोक का एकमात्र स्वामी भी जनमानस के विपरीत चलकर स्थित नहीं रह सकता। संयुक्त जनचेतना ही परम चेतना का प्रतिनिधित्व करती है। युगऋषि ने जनशक्ति की गरिमा का बोध कराते हुए यह कहा है कि समाज में मूर्धन्य दिखने वाले सभी वर्गों का आधार जनशक्ति ही होती है। ध्यान दें-

जाग्रत जनशक्ति की गरिमा असीम है। उसकी तुलना संसार की और किसी सामर्थ्य से नहीं हो सकती। सरकारें उसी के दिये हुए टैक्स पर पलती हैं। श्रीमंतों को धनी बनाने में उसी का परिश्रम छन-छनकर तिजोरियों तक पहुँचता है, साहित्यकार उसी की खरीद पर जेबें भरते हैं। कलाकार उसी को रिझाकर कंधे उचकाते हैं। पुरोहित को दान-दक्षिणा का दूध इसी गाय के थनों से निचुड़ कर उपलब्ध होता है। अपराधी उसी को नोंचते, खसोटते हैं। अणु-आयुधों के लिए विस्फोटक खोद-खोद कर जनशक्ति ही पहुँचाती है। सम्पदा और सफलता का जैसा भी कुछ भला-बुरा ढाँचा खड़ा है, उसे जनशक्ति के अनुदान का एक अंश ही कह सकते हैं। भले ही वह छल-बल के द्वारा ही हस्तगत क्यों न किया गया हो?

पदार्थों की शक्ति प्रकृति के अंतराल में छिपी पड़ी है। परब्रह्म की सत्ता और महत्ता का प्रत्यक्ष दर्शन एवं मूल्यांकन करना हो, तो उसे मनुष्य समुदाय के पराक्रम में सन्निहित देखा जा सकता है। जनता कामधेनु है। उनके सहस्रों थन हैं। उनमें से पुरोहित, शासक, श्रीमंत, विद्वान व कलाकार स्तर के मूर्धन्य अपने कौशल से अधिक दोहन करने और अधिक समर्थ बनने में सफल हुए हैं।

इतने पर भी यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि इस दोहन के उपरांत उसके पास कुछ बचा ही नहीं। उपार्जन की विपुल सम्पदा से इसके अतिरिक्त भी इतना बचता है, जिससे वह अपना निर्वाह करती और प्रगति एवं क्षतिपूर्ति का सरंजाम जुटाती है। इस जनशक्ति को यदि प्रस्तुत समस्याओं के सम्बन्ध में नये सिरे से विचार करने, नये निर्धारण एवं प्रयास अपनाने के लिए सहमत किया जा सके, तो समझना चाहिए उस महान परिवर्तन की सम्भावना सुनिश्चित हो गयी, जिसके अनुसार विनाश को निरस्त और विकास को प्रशस्त किया जाना है।

नवयुग निर्माण के संदर्भ में ऋषितंत्र अपने सहयोगी-समर्थक जाग्रत आत्माओं के माध्यम से जनचेतना को झकझोर कर जाग्रत-सक्रिय करने में संलग्न है। युगऋषि ने सूक्ष्मीकरण साधना के अन्तर्गत पाँच वीरभद्रों को इसी उद्देश्य के लिए जाग्रत किया था। उन्होंने वाञ्छित परिवर्तन के लिए जनमानस में उत्कृष्टता, आदर्शवादिता के बीज बोने की आवश्यकता पर सर्वाधिक बल दिया है। भारत की स्वतंत्रता का उल्लेख करते हुए उन्होंने उसे प्राथमिक चरण की पूर्ति भर माना है। उन्होंने लिखा एवं कहा है-

राजनीतिक क्रान्ति हुई तो राजनीतिक स्वतंत्रता मिल गयी। लेकिन जनमानस अभी भी दासता के सम्मोहन से मुक्त नहीं हुआ है। इसके लिए त्रिविध क्रान्तियाँ (बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक क्रान्तियाँ) करनी होंगी।

स्वतंत्रता का एक चरण अभी प्राप्त हुआ। तीन मोर्चों पर लड़ा जाना अभी भी शेष है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हम उसी प्रयत्न में निरंतर प्रयत्नशील रहे हैं। दूसरे सैनिकों ने अपनी वर्दियाँ उतार दीं और राजमुकुट पहन लिए, पर अपने लिए आजीवन उस चिंतन लक्ष्य की ओर चलते रहना ही धर्म बन गया है, जिसके ऊपर राष्ट्र की सर्वतोमुखी समर्थता निर्भर है। राष्ट्र की बात ही क्यों सोचें, विश्व कल्याण का मार्ग भी यही है। जनजागरण और लोकमानस में उत्कृष्टता, आदर्शवादिता का बीजांकुर बोया जाना वस्तुतः इस धरती पर स्वर्ग के अवतरण का अभिनव प्रयोग है। हम इसी दूरगामी परिणाम उत्पन्न करने वाली प्रक्रिया को हाथ में लेकर धर्म, साहस, निश्चय और प्रबल पुरुषार्थ के साथ आगे बढ़ रहे हैं और जहाँ तक हमारा प्रभाव क्षेत्र है, उसे उसी दिशा में घसीटते लिये चल रहे हैं।

उभरते प्रत्यक्ष परिणाम

ऋषितंत्र द्वारा संचालित उस सूक्ष्म, किन्तु सशक्त प्रक्रिया के सत्परिणाम अब प्रत्यक्ष जगत में उभरते दिखने लगे हैं। नीचे लिखे सांकेतिक उदाहरणों से यह तथ्य समझ में आ सकता है।

- प्रबुद्ध वर्ग के तथा उद्योग (कॉर्पोरेट) क्षेत्र के मूर्धन्य अब जीवन में आध्यात्मिक सूत्रों, नैतिक मूल्यों की स्थापना का महत्त्व स्वीकार करने लगे हैं और उस दिशा में प्रयास शुरू भी कर दिये गये हैं।
- सम्प्रदायवादी एवं नस्लवादी कट्टरता के विरुद्ध विश्व के सभी क्षेत्रों में आवाजें उठने लगी हैं और आन्दोलन उभरने लगे हैं। धर्मान्धता को दूर करने के प्रयास सभी क्षेत्रों और सभी वर्गों में जीवन्त होते दिख रहे हैं।
- नर-नारी के बीच भेद की जो चौड़ी खाई पैदा हो गयी थी, उसे पाटा जाने लगा है। नारी को अबला या पुरुष वर्ग की सेविका भर मानने के मिथक तेजी से टूट रहे हैं। नारी अपने पराक्रम के प्रमाण सभी क्षेत्रों में प्रस्तुत कर रही है। सामाजिक आन्दोलनों में वह महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। प्रशासनिक क्षमता में वह बड़ी औद्योगिक इकाइयों की मूर्धन्य जिम्मेदारियाँ उठा रही है। प्रान्तों और राष्ट्रों की बागडोर कुशलता से सँभाल रही है। पुलिस, सीमा सुरक्षा बलों तथा सेना में भी नये कीर्तिमान स्थापित कर रही है।
- हिन्दू समाज में वह रूढ़ियाँ तोड़कर धर्ममंच का संचालन करने लगी है तो इस्लामिक कट्टरवाद के विरुद्ध भी जमकर लोहा ले रही है।
- देश और दुनियाँ में जगह-जगह, छोटे-बड़े रूपों में क्रान्तियाँ उभरती दिख रही हैं। आसुरी प्रवृत्तियों के विरुद्ध सत्प्रवृत्तियों ने संगठित संघर्ष के अनेक मोर्चे खोल दिए हैं। यह सब इसी नाते संभव हो रहा है कि जनमानस मानवीय आदर्शों के प्रति जागरूक और संकल्पित होता जा रहा है।

राजनीतिक परिदृश्य

राजतंत्र का महत्व आजकल बहुत बढ़ गया है। उसे भी हीन प्रवृत्तियों से मुक्त करवाकर सत्प्रवृत्तियों में स्थापित करना जरूरी हो गया है। युगऋषि ने लिखा है-

राजनीति ने आज मानव जीवन के सभी क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया है। इसलिए उसका महत्त्व बहुत हो गया है। प्राचीनकाल में न्याय और व्यवस्था तक ही शासन का हस्तक्षेप होता था, पर अब उसका क्षेत्र बहुत बढ़ गया है और जीवन के हर पहलू को राजनीति प्रभावित करती है। स्वास्थ्य, संस्कृति, भाषा, साहित्य, कला, विज्ञान जैसे जनरुचि के विषय भी अब राजनीतिक प्रभाव क्षेत्र में आते जा रहे हैं। शिक्षा, उत्पादन, श्रम, व्यवसाय, शासन, न्याय, निर्माण, विज्ञान, शिल्प आदि तो पहले से ही उसके नियन्त्रण में पहुँच चुके हैं। धीरे-धीरे जीवन का हर क्षेत्र राजनीतिक प्रभाव के अन्तर्गत आता चला जा रहा है।

राजतंत्र के भले-बुरे संचालन की जिम्मेदारी राजेनताओं पर टिक जाती है। राजनेता जनता द्वारा चुने जाते हैं। पिछले दिनों जनजागृति के अभाव में राजनेता जनता को बहला-फुसलाकर वोट पाने में सफल होने लगे थे। जातिगत समीकरण खड़े करके, व्यक्तिगत या वर्गगत स्वार्थों के लालच में फँसी जनता वोट बैंक बनकर रह गयी थी। वह भूल गयी थी कि प्रजातंत्र में असली मालिक प्रजा ही है। कथित मंत्रीगण, विधायक, सांसद उसी के चुने हुए, नियुक्त किए हुए प्रतिनिधि भर हैं। इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए युगऋषि ने एक पुस्तिका लिखी थी-**'मालिकों को जगाओ, प्रजातंत्र बचाओ'**।

ऋषि चेतना की प्रेरणा कहें या समय की माँग, जनता को उसके अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करने के अभियान विभिन्न रूपों में चलाये गये। परिणाम सामने आने लगे हैं। विभिन्न वर्गों में विभाजित वोट बैंक के समीकरण टूटने लगे। उस आधार पर हार-जीत के अनुमान गलत साबित होने लगे। जनता ने सिद्ध कर दिया कि निर्जीव सम्पत्ति की तरह वह किसी के द्वारा प्रयुक्त की जाने वाली वस्तु नहीं है। वह अपने विवेक के द्वारा निर्णय लेकर कथित मूर्धन्यों के जड़ समीकरणों को ध्वस्त कर सकती है।

यहाँ किसी पार्टी या व्यक्ति विशेष की हार-जीत की चर्चा नहीं की जा रही है। उसका श्रेय अपने-अपने ढंग से भले ही कोई भी ले ले। लेकिन इसके पीछे असली श्रेय जाग्रत जन-मानस को ही दिया जा सकता है। उसी ने लुभावने, आकर्षक उपहारों, वर्गगत मोह और भय से ऊपर उठकर स्व-विवेक से निर्णय लिया, तभी ढर्रे के आधार पर लगाये गये अनुमान गलत सिद्ध हो सके। यह तथ्य पुकार-पुकार कर यह कह रहे हैं कि राजनेताओं, राजनीतिक पार्टियों को अब जनता की मानसिकता का मूल्यांकन नये सिरे से करना चाहिए। चुनाव में जो हारे हैं उन्हें भी और जो जीते हैं उन्हें भी। यदि उन्होंने अपने रंग-ढंग जनहित के अनुरूप न बदले तो केवल चतुराई के नाते जनता का विश्वास पाने में उन्हें सफलता नहीं मिलेगी। जनता अब राजनेताओं में भी आध्यात्मिक भावना और दृढ़ चरित्रनिष्ठा का समावेश चाहती है।

सावधान हो जायें

वर्तमान समय में जन-चेतना में जो जागृति दिखाई दे रही है वह आगे और बढ़ने वाली है। देश और विश्व के मूर्धन्यों को सावधान हो जाना चाहिए।

राजनेताओं को अभिनेताओं जैसी चतुराई से ऊपर उठकर स्वजेताओं जैसी निष्ठा और कुशलता का परिचय देना होगा। जो ऐसा करेंगे, वे युग प्रवाह से जुड़कर श्रेय-सम्मान के अधिकारी बनेंगे, शेष को निराशा और तिरस्कार की मार झेलनी पड़ेगी।

धर्म नेताओं को उपदेशक के स्तर से ऊपर उठकर लोक आराधक बनना होगा। पूजा-पाठ और चढ़ौती के आधार पर पापों के दण्ड से मुक्ति दिलाने वाले बिचौलिए न रहकर श्रद्धालुओं को जीवन साधना से जोड़कर पुण्याकर्षण के मार्ग प्रशस्त करने वाले कुशल आध्यात्मिक प्रशिक्षक-चिकित्सक सिद्ध होना पड़ेगा।

सामाजिक नेतृत्व करने वालों को व्यावसायिक एनजीओ वाली प्रवृत्ति से ऊपर उठकर **'सादा जीवन, उच्च विचार'** युक्त प्रामाणिक लोकसेवी बनना होगा। समाज को पतन के गर्त में ठेलने वाली कुरीतियों, अन्ध मान्यताओं, व्यसनों आदि से उबारने वाली बौद्धिक, नैतिक एवं सामाजिक क्रान्तियों के अग्रदूत बनना होगा।

जाग्रत जन-मानस, प्रबुद्ध और शक्तिशाली बनकर सभी से उनके आदर्शों के अनुरूप आचरण के प्रमाण माँगेगा। जनता का विश्वास पाने के लिए रावण-राहू की तरह अच्छा वेश धारण करने से बात नहीं बनेगी। उन्हें जाग्रत जनमानस के रोष-प्रकोप का शिकार होना पड़ेगा। जामवंत और हनुमान की तरह कुवेश में भी चरित्रनिष्ठों को जन-सम्मान और दैवी अनुग्रहों का लाभ मिलने वाला है।

उक्त तथ्यों के आधार पर नेतृत्व की विभिन्न धाराओं से जुड़े व्यक्तियों को चाहिए कि वे अपने चिन्तन, चरित्र और व्यवहार को यथाशीघ्र आदर्शनिष्ठ बना लें, तभी वे जनसमर्थन पा सकेंगे।

ज्ञान और आचरण में, बोध और विवेक में जो सामञ्जस्य पैदा कर सके वही विद्या है।

दण्डकारण्य में सम्पन्न हुआ 108 कुण्डीय वनांचल शांति, समृद्धि महायज्ञ

श्रद्धा, समर्पण, सहकारी व्यवस्थाओं का अद्भुत, प्रभावशाली आदर्श प्रयोग

विशाल व्यवस्थाएँ और जबरदस्त उत्साह

बारदा, कोंडागाँव (छत्तीसगढ़)

80 घर का गाँव 50,000 लोग

फरसगाँव तहसील के मात्र 80 घरों की बस्ती वाले एक छोटे-से गाँव बारदा में 9 से 12 फरवरी 2017 की तारीखों में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। आसपास के 50-60 गाँव के लोग और सात जिलों के कार्यकर्त्ताओं ने इसमें भाग लिया। जिस गाँव में दूर-दूर तक पक्की सड़क का नामोनिशान नहीं तथा जो सामान्य सुविधाओं से कोसों दूर है, ऐसे गाँव में इतने बड़े महायज्ञ का होना, 50 हजार से अधिक लोगों का भाग लेना किसी चमत्कार से कम नहीं है। यह भोले-भाले वनवासियों की निश्छल भक्ति का ही परिणाम है कि अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने इस कार्यक्रम में उपस्थित होने की स्वीकृति प्रदान की थी।

1008 कलश 1500 युवाओं ने लिया संकल्प

चार दिवसीय कार्यक्रम में अश्वमेध जैसा उत्साह दिखा। 1008 कलशों के साथ विशाल शोभायात्रा निकाली गयी। युवा सम्मेलन, प्रज्ञा पुराण कथा के आयोजन हुए। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी स्वयं तो अपरिहार्य कारणों से कार्यक्रम में नहीं पहुँच सके थे, लेकिन 8001 दीपों के साथ हुए युवा क्रान्ति दीपयज्ञ में उनका वीडियो संदेश सुनकर श्रोता बड़ी श्रद्धा के साथ अपने आप को युगदेवता के चरणों में समर्पित करने के लिए उत्साहित हुए। 1500 युवाओं ने इस वर्ष के लिए निर्धारित युवा क्रान्ति वर्ष के कार्यक्रमों को पूरा करने की शपथ ली।

81 जोड़े विवाह

पूर्णाहुति के दिन 81 जोड़ों का आदर्श विवाह सम्पन्न हुआ।

2 विशाल भोजनालय

यह कार्यक्रम इतना विशाल था कि 15-15 भट्टियों वाले दो भोजनालय चलाये गये, जिनकी व्यवस्था में 200 कार्यकर्त्ता समर्पित रहे।

कलेक्टर व कई गणमान्य आये

कोण्डागाँव जिले के कलेक्टर श्री समीर विश्नोई सहित अनेक गणमान्य श्री बीएम खुंटे, जिला महिला एवं बाल विकास कार्यक्रम अधिकारी, श्री जीएस अग्रवाल-सब डिविजनल मजिस्ट्रेट, श्री रमेश दुग्गा-डीएफओ, श्री भोजराम नाग-विधायक अंतागढ़, श्री संतराम नेताम-विधायक केसकाल, श्री सेवकराम नेताम-पूर्व विधायक केसकाल आदि श्रद्धापूर्वक यज्ञ का लाभ लेने पधारे थे।

यह ऐतिहासिक कार्यक्रम शांतिकुंज की श्री रामयश तिवारी की टोली ने सम्पन्न कराया। स्थानीय लोगों की श्रद्धा-सक्रियता का सम्मान करते हुए शांतिकुंज से विशेष प्रतिनिधि युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री के.पी. दुबे, दक्षिण पूर्व जोन प्रभारी श्री गंगाधर चौधरी एवं छत्तीसगढ़ युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री ओम प्रकाश राठौर भी भेजे गये। इसी क्षेत्र के जीवन दानी शांतिकुंज प्रतिनिधि सर्वश्री अमरलाल नाग, दयाराम नेताम, अशोक कुमार, सुषेण कुमार की पूर्व तैयारियों में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

300 गाँवों के देवी-देवता आये

पूरे बस्तर क्षेत्र के 300 गाँवों के ग्राम देवता-देवी, आंगा, डोली, छतर माँ दंतेश्वरी को लेकर आये थे। देवपूजन में उन सभी देवी-देवताओं की विशेष पूजा-अर्चना एवं पुजारियों के अभिनंदन का दृश्य अत्यंत भक्तिभावपूर्ण एवं रोमांचक था।

सरपंचों का सम्मेलन और विराट आदिवासी सम्मेलन

- बस्तर क्षेत्र के 7 जिलों में गायत्री परिवार के 150 से अधिक सरपंच हैं। इसे देखते हुए शांतिकुंज में इस क्षेत्र के पंच-सरपंचों का दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने की योजना बनायी जा रही है।
- आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने अपने वीडियो संदेश में दण्डकारण्य के विकास के लिए विशेष कार्ययोजना बनाने और इस क्षेत्र में विराट आदिवासी सम्मेलन आयोजित करने की बात कही।

यज्ञ संचालन कर रही शांतिकुंज की टोली

हीरक मण्डल ने आरम्भ की कई योजनाएँ

बारदा के निकट ग्राम पावड़ा में गायत्री परिवार द्वारा पावड़ा आश्रम बनाया गया है। यहाँ से 27 प्रज्ञा मण्डल एवं 10 महिला मण्डलों का एक हीरक मण्डल संचालित हो रहा है। कक्षा 1 से 5 तक के विद्यार्थियों के लिए गायत्री विद्यापीठ भी चल रहा है। इस कार्यक्रम में हीरक मण्डल ने क्षेत्रीय विकास की अनेक योजनाएँ बनायी हैं।

- **श्रीराम जड़ी-बूटी कृषि केन्द्र** का निर्माण कराया जा रहा है।
- **मंदिर :** बारदा के सरपंच द्वारा आवंटित ढाई एकड़ भूमि पर गायत्री ज्ञान मंदिर, यज्ञशाला, साधना-संस्कार केन्द्र का निर्माण हो रहा है।
- **आदर्श श्रीराम सरोवर** का निर्माण किया जा रहा है, जिसके आसपास 251 वृक्ष लगाये जा रहे हैं
- **विश्वामित्र स्वावलम्बन केन्द्र** का निर्माण पावड़ा आश्रम द्वारा किया गया है। वहाँ बेरोजगार लोगों को प्रशिक्षित कर उन्हें स्वावलम्बी बनाने की मुख्य योजना है।
- **कन्या कौशल प्रशिक्षण अभियान** के अन्तर्गत वनांचल की बहनों को सिलाई का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसके लिए समर्पित कार्यकर्त्ता श्री हरिशंकर नेताम ने 30 सिलाई मशीनें आश्रम को दी हैं। वे बेरोजगार भाइयों के प्रशिक्षण के लिए 10 कम्प्यूटरों की भी व्यवस्था करने जा रहे हैं।

निर्माणाधीन श्रीराम सरोवर क्षेत्र में शांतिकुंज की टोली

गायत्री माता आयीं विकास की धारा लायीं

कार्यक्रम के प्रमुख संयोजक श्री महाप्राण पुरोहित जी ने बताया कि वहाँ सन् 2008 में एक यज्ञ हुआ था, जिसके बाद से पूरे क्षेत्र में माँ गायत्री और गायत्री परिवार के प्रति अगाध श्रद्धा है। तब बनाया हुआ एक मिट्टी का शिवलिंग आज भी वहाँ स्थापित है। इसके दर्शन से लोगों के दुःख-कष्टों का निवारण हो जाता है। सन् 2008 से ही वहाँ अनवरत साधना चल रही है।

शबरी के घर आये श्रीराम

क्षेत्र में इतने बड़े यज्ञ का आयोजन और आदरणीय डॉ. साहब के आगमन के प्रति लोगों में अगाध श्रद्धा थी। हमें हर पल ऐसा एहसास होता रहा है मानो पतित पावनी, सद्बुद्धिदायनी युगशक्ति माँ गायत्री के रूप में शबरी की कुटिया पर भगवान श्रीराम पधार रहे हैं।

- श्री महाप्राण पुरोहित

इस कार्यक्रम को लेकर जिस तेजी से क्षेत्र में सड़क, पुल, स्वावलम्बन केन्द्र, श्रीराम सरोवर आदि का विकास हुआ है और भावी योजनाएँ बनी हैं, उन्हें देखते हुए स्थानीय लोगों को यह दृढ़ विश्वास हो गया है कि गायत्री माता की कृपा से क्षेत्र का तेजी से विकास होगा, वरना नक्सलवाद के चलते क्षेत्र के विकास की योजनाएँ ही कहाँ बनती थीं?

श्री पुरोहित जी ने बताया कि कार्यक्रम में लगभग 100 ऐसे कार्यकर्त्ताओं का अविस्मरणीय योगदान रहा, जो मिशन में पहले सक्रिय नहीं थे। उनके अलावा सैकड़ों समर्पित कार्यकर्त्ता सर्वश्री लक्ष्मण नाग, झारीराम सलाम, कल्याण सिंह नेताम, अजय मराफी, शिवशंकर नाग, ग्राम सरपंच घनश्याम नेताम, सत्येन्द्र मराफी-सचिव, सरपंच निर्मल नाग, वीरेन्द्र मराफी, शंकर शार्दुल, समाजसेवी जुगधर मराफी आदि की श्रद्धा, सेवा, सक्रियता ने इस महान यज्ञ की अप्रत्याशित सफलता में अविस्मरणीय योगदान दिया।

डोण्ड्रा में भी भक्ति की शक्ति के दर्शन हुए

डोण्ड्रा, कोण्डागाँव (छत्तीसगढ़)

बारदा की तरह ही सहकार-श्रमदान पर आधारित एक कार्यक्रम 19 से 21 फरवरी की तारीखों में विश्रामपुरी ब्लॉक के ग्राम डोण्ड्रा में हुआ। कार्यक्रम 9 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का था, जिसे श्री महाप्राण पुरोहित की टोली ने सम्पन्न कराया।

प्रज्ञा मण्डल के सदस्यों ने मजदूरी कर जुटाया धन

इसके लिए आवश्यक धन एकत्रित करने के लिए प्रज्ञा मण्डल के लगभग 50 सदस्यों ने सप्ताह में एक दिन दूसरों के खेतों में मजदूरी की, धान काटा, आलू निकाले। कार्यकर्त्ताओं ने अपने खेतों में कार्यक्रम के निमित्त सब्जियाँ बोयीं।

पूरे गाँव में नहीं जले चूल्हे

सद्भाव, सहकार के परिणाम से बड़ा भव्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन 7-8 पारी यज्ञ होता था। आसपास के कई गाँव गायत्रीमय हो गये। डोण्ड्रा में चार दिनों तक किसी के घर में चूल्हा नहीं जला, सभी ने कार्यक्रम में ही प्रसाद ग्रहण किया।

7 दिन नशा-मांसाहार नहीं

इस कार्यक्रम के निमित्त गाँववालों ने 7 दिनों तक पूरी तरह सात्विकता अपनायी। आदिवासी क्षेत्र होते हुए भी इन सात दिनों में किसी ने किसी तरह का नशा या मांसाहार नहीं किया।

आद. जीजी का आशीर्वाद फला

शांतिकुंज से आदरणीया जीजी ने फोन से बहुत सफल कार्यक्रम और खूब संस्कार होने का आशीर्वाद दिया था, वही हुआ। 40 यज्ञोपवीत, एक विवाह व 56 दीक्षा संस्कार हुए।

आस्था और भक्ति की अद्भुत गाथा

हर पल अनुभव होती है यज्ञाहुतियों की मनमोहक सुगंध

यज्ञभूमि के लिए खेत दिया, नहीं ली 10 लाख की फसल

- इस यज्ञ के लिए 8-10 एकड़ बड़े भूभाग की आवश्यकता थी। गुरुदेव के प्रति अनन्य निष्ठा रखने वाले एक किसान ने अपनी खेती की जमीन इसके लिए दे दी। उस पर यदि फसल ली जाती तो 10 लाख रुपये की होती।

अभिभूत किसान ने सारी सब्जियाँ दान कर दीं

- एक किसान से अपनी खेती की सारी सब्जियाँ इस कार्यक्रम के लिए उचित दाम पर बेचने का आग्रह किया गया। इसके लिए उसने हर तरह की सब्जी उगायी और कार्यक्रम में कई ट्रॉलियाँ सब्जी भिजवायी। देवपूजन और यज्ञ करने के बाद उन्होंने भेजी गयी सारी सब्जियाँ बिना कोई मूल्य लिये यज्ञ भगवान को समर्पित कर दीं।

यज्ञ के लिए खेती कर धन जुटाया

- कार्यक्रम बड़ा था तो धन की आवश्यकता भी अधिक थी। स्थानीय प्रज्ञा मण्डल ने इसके लिए सरपंच से 3 एकड़ भूमि (अस्थाई) ली, उस पर मक्का की खेती कर तीन लाख रुपये कमाये जिसका उपयोग केवल कार्यक्रम के लिए किया गया।

प्रशासन ने 15 कि.मी. सड़क बनायी

- नक्सल प्रभावित क्षेत्र होने के कारण क्षेत्र में पक्के रोड आदि के दूर-दूर तक दर्शन नहीं होते थे। हजारों लोगों के साथ आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के आगमन की संभावनाओं को देखते हुए मात्र दो माह में टेंडर हुए और लगभग 15 कि.मी. रोड बन गया।

श्रमदान से बना चार कि.मी. का मार्ग

- बारदा गाँव के सरपंच ने गाँववासियों के श्रमदान, सहयोग से चार किमी. का दो लेन जितना चौड़ा मार्ग बनवा दिया।

श्रमदान से बना 4 किमी मार्ग

श्रीराम के नल-नीलों का कमाल

- बारदा पहुँचने के लिए एक नदी पार करनी होती है। लगभग 100 आदिवासी कार्यकर्त्ताओं ने मिलकर इस पर मात्र दो दिन में 70 फीट लम्बा इतना मजबूत पुल तैयार कर दिया, जिसपर कार, ट्रक, ट्रैक्टर सभी आ-जा सकें।
- बारदा के निकट ग्राम पावड़ा आश्रम में कार्यकर्त्ताओं ने 31 दिन में स्वावलम्बन केन्द्र का भवन बना डाला। एक इंजीनियर ने इस पर आश्चर्च व्यक्त करते हुए इसे परम पूज्य गुरुदेव के नल-नीलों की अनुपम कृति बताया।
- समर्पित कार्यकर्त्ता श्री लक्ष्मण नाग ने आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के आवास के लिए मात्र दो माह में चार कमरों का भवन विशेष रूप से बनवा लिया था।

बारदा यज्ञ में यज्ञोपवीत संस्कार करा रहे वनवासी

नैष्ठिक प्रयासों से बदलते देश और समाज की उत्साहवर्धक परिणतियाँ

मुट्ठीभर युवाओं ने शुद्ध कर दिखाया माँ नर्मदा का आँचल

20 कि.मी. लम्बाई पर नर्मदा तट के 50 गाँवों में फैल गया है अभियान

बार्ये-नर्मदा के घाट पर श्रमदान करते युवा

बड़वानी (मध्य प्रदेश)

युवा प्रकोष्ठ बड़वानी के लगभग 25 युवाओं द्वारा आरंभ किये गये नियमित-नैष्ठिक प्रयासों ने क्षेत्र के राजघाट, मोहीपुरा, बड़दा आदि घाटों को पूरी तरह से स्वच्छ बना देने का आदर्श प्रस्तुत किया है। सन 2009 से चले आ रहे उनके प्रतिदिन प्रातः 7 से 9 बजे तक किये जाने वाले श्रमदान का ही प्रभाव है कि इन घाटों के आसपास के दुकानदार तो पॉलीथीन का प्रयोग भी नहीं करते। युवकों की पिछले आठ वर्षों की मेहनत का ही परिणाम है कि लोगों का मानस बदल रहा है, व्यसनमुक्ति अभियान को शानदार सफलता मिल रही है।

युवकों के क्रमशः बढ़ते प्रभाव और प्रयासों से अब यह अभियान बड़वानी-अंजड़ की 20 कि.मी. लम्बी नर्मदा पट्टी तक फैल चुका है। लगभग 50 गाँव इससे जुड़ गये हैं। इन गाँवों में नर्मदा श्रमदान समितियाँ बनायी जा रही हैं। गाँव के लोग भी प्रातःकालीन श्रमदान में नियमित रूप से भाग ले रहे हैं। तटों के अलावा गाँवों को भी स्वच्छ बनाया जा रहा है।

स्वावलम्बन की ओर बढ़े कदम

नर्मदांचल शुद्धि के साथ अब युवा प्रकोष्ठ ने गाँवों की बेरोजगारी को दूर करने के लिए स्वावलम्बन अभियान चलाया है। इसके अंतर्गत गाँव-गाँव 5 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर लगाये जा रहे हैं। दैनिक श्रमदान के बाद गाँववासियों को अगरबत्ती, चूड़ी, साबुन, शैम्पू, सिलाई-कढ़ाई जैसे कुटीर उद्योग चलाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इनसे प्रशिक्षित होकर कुकरा व राजघाट की महिलाओं ने तो अगरबत्ती एवं चूड़ी बनाने का लघु उद्योग आरंभ भी कर दिया है।

युवा सक्रियता एक दृष्टि में

- 8 वर्षों से प्रतिदिन दो घंटे श्रमदान।
- नर्मदा युवा मण्डल बन रहे हैं। इनके सदस्यों के 30 रुपये मासिक श्रमदान से शवदाह गृह, शौचालय, कपड़े बदलने के कक्ष, कूड़ादान, मार्गों का चौड़ीकरण जैसे कार्य कराये जा रहे हैं।
- पर्वों की ईको फ्रैण्डली परम्परा को प्रोत्साहन, प्रशिक्षण, व्यवस्था।
- तटों पर स्वच्छता संबंधी होर्डिंग लगाये। इनसे प्रभावित होकर तीर्थयात्री भी स्वच्छता का ध्यान रखते हैं।
- विद्यालयों में सभा-संदेश, चित्रकला, निबंध, भाषण आदि प्रतियोगिताएँ।
- नर्मदा तट पर अब तक लगभग 5000 पेड़ लगाये गये हैं।

नर्मदा तट पर बच्चों की चित्रकला प्रतियोगिता

स्वावलम्बन प्रशिक्षण-चूड़ी बनाना सीखती बहनें

नयी ऑडियो सीडी

नित नमन माँ नर्मदे, भाग-2

युवा प्रकोष्ठ ने नर्मदांचल शुद्धि अभियान को प्रोत्साहित करने के लिए एक ऑडियो सीडी 'नित नमन माँ नर्मदे, भाग-2' तैयार की है। पावन शिवरात्रि पर्व पर शांतिकुंज में आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं आदरणीया शैल जीजी ने इसका विमोचन किया। सीडी का विमोचन कराने युवा प्रकोष्ठ बड़वानी के प्रमुख सदस्य सर्वश्री डाया जी, के.आर. खन्ना, राकेश खन्ना, लखन विश्वकर्मा आदि विशेष रूप से शांतिकुंज आये थे। ऑडियो सीडी में 6 गीत हैं, जिन्हें स्थानीय कलाकारों के सहयोग से तैयार किया गया है। इनमें नर्मदा को स्वच्छ, सुंदर बनाने का मार्मिक संदेश दिया गया है।

तंबाकू निषेध अभियान का एक सुनहरा दिन

राजस्थान ने बनाया विश्व कीर्तिमान : 1,76,693 लोग दण्डित

जयपुर (राजस्थान)

राजस्थान सरकार के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग ने **'तंबाकू निषेध दिवस'-28 फरवरी** को एक विशेष अभियान चलाते हुए एक ही दिन में 'सिगरेट एण्ड अदर टोबैको प्रोडक्ट एक्ट (COTPA)' का उल्लंघन करने वाले 1,76,693 लोगों को दण्डित किया। संभवतः यह एक विश्व रिकॉर्ड है। विभाग आवश्यक प्रमाण जुटाकर इसे गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड एवं लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में दर्ज कराने की तैयारी कर रहा है। इससे पूर्व सन् 2016 में COTPA कार्यकर्त्ताओं द्वारा झुंझुनू जिले में 5,600 लोगों को दण्डित करने का विश्व कीर्तिमान दर्ज है।

इस अभियान में सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान या तंबाकू से बने अन्य पदार्थों का सेवन करने वालों को दंडित किया गया। शिक्षण संस्थानों के 100 गज के दायरे में तंबाकू से बने पदार्थ बेचने वालों को भी दण्डित किया गया। अकेले चूरू जिले में COTPA का उल्लंघन करने वाले 32,002, झालावाड़ में 29,762 तथा जयपुर में 22,009 लोगों को दण्डित किया गया।

राजस्थान के चिकित्सा मंत्रालय को सबसे बड़ा जनजागरण अभियान चलाने के लिए मिला सम्मान

लक्ष्य रहा-जनजागरूकता

संबंधित अधिकारियों ने बताया कि इस अभियान का लक्ष्य लोगों को दण्डित कर राजस्व जुटाना नहीं, बल्कि उन्हें तम्बाकू से होने वाले दुष्प्रभावों से अवगत कराते हुए उससे जुड़े नियमों का कड़ाई से पालन कराना है। वे कानून का उल्लंघन करने वालों से 200 रुपये तक वसूल कर सकते थे, लेकिन उन्होंने मात्र एक रुपये तक का दण्ड देते हुए लोगों को नियमों का पालन करने की चेतावनी भर दी है।

गायत्री परिवार की भूमिका

अपने नैष्ठिक कार्यकर्त्ता एवं स्वास्थ्य मंत्री, राजस्थान सरकार श्री कालीचरण सर्राफ के निजी सहायक श्री दीपक नंदी ने बताया कि यह देश की किसी सरकार द्वारा चलाया गया अब तक का एक अद्वितीय अभियान है। गायत्री परिवार एवं उसके जैसी सामाजिक संस्थाओं के परामर्श व सक्रियता निःसंदेह सरकार को इस तरह की पहल के लिए प्रेरित करती है।

सामूहिकता का प्रभाव — आदर्शोन्मुख हुआ चिकनी गाँव

चिकनी, नरसिंहपुर (मध्य प्रदेश)

नरसिंहपुर शाखा ने चिकनी गाँव को गोद लेकर उसे आदर्श गाँव बनाने के प्रयास आरम्भ किये तो आज उसके उत्साहजनक परिणाम दिखाई देने लगे हैं। पूरा गाँव उमंग-उल्लास से भर गया है। इनके माध्यम से लोगों के विचार, भावना, स्वभाव, संस्कारों में बदलाव आ रहा है।

गाँव के इन आदर्श प्रयासों से पड़ोसी गाँव के लोग भी खूब प्रभावित हैं। वहाँ भी ऐसी ही गतिविधियाँ चल पड़ी हैं। जिलाधिकारी नरसिंहपुर ने गायत्री परिवार के इन आदर्श प्रयासों का सम्मान करते हुए प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया है।

- हर रविवार को घर-घर दीपयज्ञ और मिशन की परम्परा से सामूहिक संस्कार कराये जाते हैं।
- घर-घर सामूहिक साधना हो रही है।
- पूरे गाँव की दीवारों पर सुन्दर सद्वाक्य लिखे गये हैं।
- सामूहिक श्रमदान से सड़कों को सुंदर-समतल बनाया जा रहा है।
- नर्मदा शुद्धि अभियान के अन्तर्गत नियमित रूप से सामूहिक श्रमदान होता है।
- गायत्री परिवार की प्रेरणा और सामूहिक सहयोग से घर-घर शौचालय बनाये जा रहे हैं।
- शक्तिपीठ नरसिंहपुर के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री राजेन्द्र शर्मा नशामुक्ति का सफल अभियान चला रहे हैं।

पर्यावरण

पीहर में पेड़ लगाकर हरीभरी यादों के साथ विदा हुई दुल्हन

पीहर पेड़ योजना

लखीमपुर (उत्तर प्रदेश)

केंद्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिक श्री आलोक मिश्रा ने अपनी बहन अंजनी और देवेश के विवाह में पर्यावरण संरक्षण की एक नयी पहल की। उन्होंने बहन के विवाह समारोह में ही दो पौधों का तरुपूजन संस्कार कराया।

कन्या की स्मृति अथवा धरोहर के रूप में नवदम्पति ने एक पौधा कन्या द्वारा अपनी हरीभरी यादों को गृहनगर (पीहर) में छोड़कर जाने के प्रतीक के रूप में रोपा। दूसरा तुलसी का पौधा था। तुलसी जैसा सात्विक, संस्कारित जीवन जीने के संकल्प के रूप में वे उसे अपने साथ ले गये और वर के घर-आँगन में रोपा।

हरीभरी यादों का प्रतीक पेड़ लगाते नवदम्पति

श्री आलोक मिश्रा गायत्री परिवार से जुड़े हैं। उन्होंने इस अनूठे कार्यक्रम को 'पेड़ पीहर योजना' नाम दिया है। इसकी प्रेरणा और विधि-विधान संबंधी परचे भी उन्होंने विवाह में वितरित किये। पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए लोगों से इस योजना को अपनाने का आग्रह किया।

सेवा के प्रति निष्ठा, नियमितता से मिला लोकसम्मान

डॉ. नवीन शर्मा

डॉ. शर्मा अखण्ड ज्योति पत्रिका के नियमित पाठक हैं और परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से बहुत प्रभावित हैं।

विदिशा (मध्य प्रदेश)

विदिशा निवासी डॉ. नवीन शर्मा ने जीवन आदर्शों को अपनाने और उन्हें निभाने का एक अनुकरणीय आदर्श समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। वे अखण्ड ज्योति के नियमित पाठक हैं। पिछले 30 वर्षों से वे हर वर्ष एक संकल्प लेते हैं और उसे हर दिन निष्ठापूर्वक निभाते हैं। उनके संकल्पित सेवाकार्यों ने समाज को बहुत प्रभावित किया है। आदर्शों के प्रति अटूट निष्ठा के परिणाम स्वरूप अनेक शासकीय एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा वे सम्मानित किये जाते रहे हैं।

नदी में नहीं, खेतों में विसर्जित की चिता की राख

अकोला (महाराष्ट्र)

समर्पित कार्यकर्त्ता डॉ. सुरेश राठी ने अपनी माता के देहावसान के पश्चात उनकी चिता की राख को नदी-जलाशय में विसर्जित करने की बजाय अपने खेतों में विसर्जित की। डॉ. राठी ने परम पूज्य गुरुदेव एवं संत तुकड़ो जी महाराज के साहित्य से इस कार्य की प्रेरणा ली, साथ ही ऐसा करते हुए गायत्री परिवार के निर्मल गंगा जन अभियान तथा प्रधानमंत्री जी के स्वच्छ भारत अभियान को एक नयी दिशा प्रदान की। उन्होंने बताया कि ऐसा करने से जहाँ जलाशय प्रदूषित नहीं होते, वहीं मनुष्य की हड्डियों की राख में फॉस्फोरस प्रचुर मात्रा में होता है। यह खेतों के लिए एक उत्तम खाद का काम करती है।

चिता की राख को खेतों में विसर्जित करते परिवारी जन

नेत्रदान और धन का सदुपयोग किया

राठी परिवार ने अपनी दिवंगत माता की इच्छा के अनुसार उनके नेत्र कमलांजलि अस्पताल को दान कर दिये। मरणोत्तर संस्कार सादगीपूर्वक विधि-विधान से कराया गया। फिजूलखर्च होने से बची राशि को सामाजिक उत्कर्ष के कार्यों में लगाया गया।

37 लोगों ने किया रक्तदान

भिवंडी, ठाणे (महाराष्ट्र)

गायत्री परिवार प्रज्ञा केन्द्र ठाणे और 'दिया' मुम्बई के कार्यकर्त्ताओं ने 5 मार्च को दुर्गेश दीप सोसायटी, कल्हेर, भिवंडी में रक्तदान शिविर आयोजित किया। सोसाइटी के 60 लोगों ने रक्तदान के लिए अपना पंजीयन कराया था, जिनमें से रक्तदान करने योग्य पाये गये 37 लोगों ने बड़े उत्साह के साथ रक्तदान किया।

दोनों ही संगठनों के संयुक्त प्रयासों से लगातार तीसरे वर्ष यह शिविर आयोजित किया गया था। सर्वश्री उपेन्द्र चौबे, महेन्द्र पटेल, इंद्रभूषण गोखले, नितेश कुमावत, राजेश पटेल, ओंकार यादव, शिव आदि ने अपनी अग्रणी सेवाएँ प्रदान कीं।

संस्कार परम्परा और नवसृजन अभियान को गति देते यज्ञ-कथा समारोह

जीवन के अमृत का रसपान कराती प्रज्ञा पुराण कथा

यवतमाल (महाराष्ट्र)
यवतमाल शहर के वाघापुर क्षेत्र स्थित श्री दुर्गामाता मन्दिर, पटवारी कॉलोनी में चार दिवसीय प्रज्ञा पुराण कथा एवं 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन सपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन शान्तिकुंज प्रतिनिधि श्री सूरत सिंह अमृते की टोली ने किया। उन्होंने कहा कि प्रज्ञा पुराण कथा सद्बुद्धि की देवी माता गायत्री की अमृतमयी कथा है जिसके श्रवण से जीवन की विभिन्न समस्याओं का समाधान मिलता है, पुण्यलाभ होता है।

तीन दिन तक चले गायत्री महायज्ञ में हजारों श्रद्धालुओं ने आहुतियाँ समर्पित करते हुए जन-जन के कल्याण की प्रार्थना की, वहीं मन्त्रदीक्षा, नामकरण, विद्यारभ, यज्ञोपवीत आदि संस्कार बड़ी संख्या में हुए।

यवतमाल में पावन प्रज्ञा पुराण कथा का श्रवण करतीं बहिनें

कार्यकर्त्ता गोष्ठी में गायत्री परिवार ट्रस्ट, यवतमाल के अध्यक्ष श्री कृष्ण बनसोड, जिला समन्वय समिति के अध्यक्ष श्री वसन्तराव जी, महिला मण्डल प्रतिनिधि सौ. अर्चना जी, ट्रस्ट की उपाध्यक्षा सौ. चौहाण बहिन व धवड़े गुरुजी सहित अनेक गणमान्यों ने भाग लिया। गोष्ठी में भावी कार्ययोजनाओं पर गहन विचार-विमर्श किया गया। परिणाम स्वरूप श्री बनसोड ने शहर में तीन बालसंस्कार केन्द्र चलाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में दुर्गा मन्दिर के अध्यक्ष श्री बोंकिन पिल्लेवार, सुधाकर झोड़े, दिलीप, सुरेश, सौ. किशोरी, गीतेश्वरी, रीता आदि ने सराहनीय सहयोग किया।

घर-घर जाकर नारी जागरण का संदेश दे रही हैं देवियाँ

गुना (मध्यप्रदेश)
गायत्री परिवार गुना के महिला मण्डल की प्रज्ञापुत्रियों ने पूज्य गुरुदेव के 21वीं सदी-नारी सदी के कथन को चरितार्थ करते हुए नारी जागरण की अनुकरणीय शुरुआत की है। वे घर-घर जाकर यज्ञ, दीपयज्ञ आदि के माध्यम से पूज्य गुरुदेव का सन्देश सुनाती और जन-जन को जागरूक करती हैं। इसी क्रम में गुना की सीताराम कॉलोनी में दीपयज्ञ के साथ जन्म दिवस का उत्सव संपन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती हुण्डित, रजक व कविता की टोली ने किया।

श्रीमती हुण्डित जी ने पूज्य गुरुदेव के विचारों का उल्लेख करते हुए कहा कि जाग्रत् नारी शक्ति देश की दिशा बदल सकती है। आवश्यकता उसे जगाने की, उसकी शक्तियों का बोध कराने की है। श्रीमती कविता सोनी ने भारतीय संस्कृति में नारी की गौरव-गरिमा और क्षमताओं पर प्रकाश डाला।

दीपयज्ञ में बड़ी संख्या में बहिनें सम्मिलित हुईं, 40 बहिनों ने गुरु दीक्षा ली। इस अवसर पर विभिन्न संस्कारों के बारे में भी प्रतिभागियों को अवगत कराया गया। कार्यक्रम की सफलता में श्री सुनील सेन आदि की सक्रिय भागीदारी रही।

सीताराम कॉलोनी में जन्म दिवसोत्सव मनाती बहिनें

सैकड़ों लोगों ने नशा छोड़ा, दीक्षा ली

आकोलिया, धार (म.प्रदेश)
पर्यावरण संतुलन में यज्ञ का विशेष महत्त्व है। यह भावशुद्धि का सशक्त आधार है। इसीलिए ऋषि-मुनियों ने सार्वजनिक जीवन में यज्ञ का प्रचलन किया और उसके शारीरिक-मानसिक लाभों से लोगों को परिचित कराया। इसी प्रेरणा के साथ आकोलिया में 10 से 12 फरवरी की तारीखों में नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सपन्न हुआ।

- शराब छोड़ने का लिया संकल्प
- युवाक्रांति वर्ष के कार्यक्रमों को गति दे रहे युवा

इस अवसर पर आयोजित भव्य कलश यात्रा में निकटवर्ती कई गाँवों के नर-नारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यज्ञ में कुरीति उन्मूलन एवं सत्प्रवृत्ति संवर्धन हेतु प्रतिभागियों को प्रेरित किया गया। कई पारियों में हुए यज्ञ की पूणार्हुति के अवसर पर अनेक भाइयों ने शराब व अन्य नशा छोड़ने का संकल्प लिया। इस अवसर पर सौ से अधिक नये परिजनों ने गुरुदीक्षा लेकर युवाक्रांति वर्ष के अंतर्गत चलाये जा रहे रचनात्मक कार्यक्रमों में भागीदारी करने का संकल्प लिया। यज्ञ संचालन श्री रामलाल पटेल की टोली ने किया। सर्वश्री गणपत सेन, मोहन रघुवंशी, नरेन्द्र वर्मा, विक्रान्त सेन आदि का सक्रिय योगदान रहा।

प्रज्ञा पुराण कथाओं से संस्कार परम्परा को प्रोत्साहन

राजलदेसर, चुरू (राजस्थान)
गायत्री प्रज्ञापीठ राजलदेसर में 4 से 7 फरवरी की तिथियों में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन हुआ। भव्य कलश यात्रा के दौरान 1100 बहनों ने अपने ओजस्वी जयकारों और गीतों से नवजागृति का संदेश दिया। जगह-जगह कलश यात्रा का भव्य स्वागत हुआ।

यज्ञ-कथा संचालन श्री गोपाल स्वामी की टोली ने किया। उन्होंने व्यक्ति निर्माण को परिवार निर्माण और समाज निर्माण का आधार बताया। कार्यकर्त्ताओं की गोष्ठी में युवा क्रांति वर्ष के कार्यक्रमों एवं आंदोलनों को तीव्र गति से आगे बढ़ाने पर जोर दिया गया।

अनेक परिजनों ने प्रज्ञा पुराण व युग साहित्य की स्थापना भी करवाई। कार्यक्रम को सफल बनाने में राजलदेसर, पडियारा, सुजानगढ़, रतनगढ़, नुवा, जालेऊ आदि के परिजनों ने भरपूर सहयोग किया।

बड़ी संख्या में हुए संस्कार :
कार्यक्रम में गायत्री मन्त्र की दीक्षा, यज्ञोपवीत, विद्यारंभ आदि संस्कार बड़ी संख्या में हुए, श्रीराम स्कूल, स्वामी विवेकानन्द स्कूल, सूर्य मॉडर्न पब्लिक स्कूल, गणेश बाल निकेतन, खाकी धोरा आदि के बच्चों का सामूहिक विद्यारंभ संस्कार भी कराया गया।

सेमली चोहान, झालावाड़ (राजस्थान)
झालावाड़ के परिजनों के प्रयास से 11 से 17 जनवरी की तिथियों में गाँव सेमली चोहान में 11 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं पावन प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन हुआ। इसका शुभारंभ भव्य कलश यात्रा से हुआ, जिसमें सैकड़ों बहिनों ने जनजागरण का सन्देश दिया।

कार्यक्रम का संचालन शांतिकुंज प्रतिनिधि सर्वश्री नरेन्द्र सिंह ठाकुर, दिनेश मरकाम, ताराचन्द एवं वसन्त जी की टोली ने किया। प्रतिदिन सुबह यज्ञ के साथ संस्कार एवं दोपहर में प्रज्ञा पुराण कथा का क्रम चला। 12 जनवरी को स्वामी विवेकानन्द की जयन्ती मनाई गई। जिसमें केन्द्रीय प्रतिनिधि ने स्वामी विवेकानन्द जी के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। इस अवसर पर नगरपालिका अध्यक्ष श्री निर्मल शर्मा सहित अनेक गणमान्य उपस्थित थे। 14 जनवरी के सायंकाल आयोजित दीपयज्ञ भी प्रभावशाली रहा। कार्यक्रम के दौरान 101 पौध रोपी गयीं। पशुबलि, बाल विवाह, घूँघट प्रथा आदि कुरीतियों को रोकने का संकल्प दिलाया गया।

गायत्री चेतना केन्द्र, बेदला का भूमिपूजन सपन्न

ग्रामीण क्षेत्र में प्रगतिशील परम्पराओं और सृजनात्मक कार्यक्रमों को गति दी जायेगी

बेदला, उदयपुर (राजस्थान)
क्षेत्र में प्रगतिशील परम्पराओं तथा सृजनात्मक कायक्रमों को गतिशील बनाने के लक्ष्य के साथ बेदला में गायत्री चेतना केन्द्र के निर्माण का संकल्प लिया गया। 10 से 12 फरवरी की तारीखों में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ चेतना केन्द्र का भूमिपूजन भी हुआ। चेतना केन्द्र के निर्माण से क्षेत्र में युग निर्माण के आंदोलनों को गति मिलने के साथ-साथ विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रमों के संचालन को गति दी जा सकेगी।

- शिक्षा मंत्री पधारीं
- बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ अभियान को प्रोत्साहन

कार्यक्रम के दूसरे दिन आयोजित दीपमहायज्ञ में राजस्थान की शिक्षामंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी ने गायत्री परिवार द्वारा चलाये जा रहे सप्त आन्दोलनों को प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम का संचालन शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री कामता साहू की टोली ने किया। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया गया, जिससे प्रभावित होकर 40 बहनों ने पुंसवन संस्कार कराये एवं 30 लोगों ने दीक्षा ली।

सर्वश्री बंशीलाल कुम्हार, मदन सिंह चौहान, देवेन्द्र, सत्यनारायण जोशी, हनुमान सेवा समिति के अध्यक्ष सहित गायत्री शक्तिपीठ उदयपुर के श्री ओमप्रकाश पारीक, श्री जयप्रकाश सनाढ्य, श्रीमती फतह कुँवर सनाढ्य, श्री रामस्वरूप पंचोली आदि ने कार्यक्रम में भाग लेते हुए क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं के संकल्प को बल प्रदान किया।

यज्ञ, रक्तदान शिविर एवं बाल संस्कारशाला प्रशिक्षण शिविर

लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
आशियाना लखनऊ स्थित आरजू पार्क में नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम संचालक श्री अरुण श्रीवास्तव के अनुसार इस महायज्ञ में फैजाबाद के सिविल जज श्री भगीरथ वर्मा, आरडीएसओ के कार्यकारी निदेशक श्री अशोक मिश्र, सीमैप के ग्रामीण विकास के विभागाध्यक्ष श्री आर. के. श्रीवास्तव, श्री विमल मिश्रा व कमलेश वर्मा सहित बड़ी संख्या में नगर के प्रबुद्ध जन शामिल हुए। श्री देशबन्धु तिवारी व श्री अशोक मिश्र ने महायज्ञ का संचालन किया। उन्होंने युगऋषि के नवसृजन अभियान की जानकारी दी, उसमें भागीदारी के संकल्प दिलाए। इस दौरान एस.जी. पी.जी.आई. की ओर से रक्तदान शिविर भी लगाया गया, जिसका उद्घाटन एन.बी.आर.आई. के प्रमुख डॉ. एस.के. तिवारी ने किया। आशियाना कॉलोनी के जन कल्याण समिति के अध्यक्ष श्री आरजी पोरवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

इस शिविर में रक्तदान शिविर का आयोजन भी किया गया था, जिसमें कुल 30 लोगों ने रक्तदान किया। प्रायोगिक प्रशिक्षण के साथ संस्कार शाला संचालन की प्रेरणा दी गयी। इस शिविर में स्कूल के सौ बच्चों ने भाग लिया।

यज्ञों के माध्यम से युवाशक्ति में नवचेतना जगायी

कोटा (राजस्थान)
कोटा के परिजन युवाक्रांति वर्ष के अंतर्गत शृंखलाबद्ध रूप से गायत्री महायज्ञ एवं पुस्तक मेला आयोजित कर नवसृजन के कार्यों को गति प्रदान कर रहे हैं। इसी शृंखला में 21 और 22 जनवरी को रंगपुर रोड नं.-2, कोटा जंक्शन तथा 11 से 12 फरवरी को खेड़ली पाड्ल्या में 5 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सपन्न हुए। गायत्री शक्तिपीठ कोटा के श्री चतुर्भुज जोशी एवं श्री हेमराज बंसल ने यज्ञ संचालन किया। मुख्य यजमान के रूप में स्थानीय पार्षद श्रीमती वंदना अग्रवाल व श्री प्रवीण अग्रवाल उपस्थित थे। यज्ञ संचालकों ने समाज के नवनिर्माण एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए योगदान देने हेतु प्रतिभागियों को प्रेरित किया। यज्ञ में कई संस्कार भी कराए गए।

- पुस्तक मेला, चिकित्सा शिविर व प्रबुद्ध वर्ग गोष्ठी का आयोजन

इस अवसर पर पुस्तक मेला लगाया गया। प्रबुद्ध वर्ग की विशेष संगोष्ठी का आयोजन करते हुए श्रद्धालुओं से वर्तमान समय की चुनौतियों का समाधान करने के लिए सक्रिय सहयोग करने का आह्वान किया गया। निःशुल्क चिकित्सा शिविर भी लगाया गया, जिसमें सैकड़ों भाई-बहिनों का स्वास्थ्य परीक्षण कर दवाइयाँ दी गयीं।

यज्ञ योजना के संग वृक्षारोपण और स्वच्छता अभियान

देवास (मध्य प्रदेश)
गायत्री शक्तिपीठ एवं गायत्री प्रज्ञापीठ देवास के परिजनों ने पर्यावरण संरक्षण अभियान का अभिनव प्रयोग किया। इसके अंतर्गत मिश्रीलाल नगर के 108 घरों में विश्व कल्याण एवं पर्यावरण संरक्षण की कामना के साथ गायत्री यज्ञों का आयोजन कराया गया। उन सभी घरों के सदस्यों को पर्यावरण संरक्षण अभियान में सक्रिय योगदान के संकल्प दिलाये गये।

- 108 घरों में किया गया प्रयोग

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री कैलाश महाजन एवं गायत्री प्रज्ञापीठ देवास की सुश्री दुर्गा समधिया ने यज्ञ संचालन के लिए समारोहपूर्वक 108 उपाचार्यों का मंगल तिलक कर रवाना किया। इस अवसर पर श्री कैलाश महाजन ने कहा कि लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता नहीं बढ़ी तो जीवन संकट में पड़ जाएगा। गायत्री परिवार ने इसीलिए यज्ञ के साथ वृक्षारोपण और स्वच्छता का अभियान चलाया है।

दुर्गा दीदी ने नारियों को आगे आने, अपनी शक्ति को पहचानने और मिशन के इस कल्याणकारी अभियान को सफल बनाने में सहयोग करने की बात कही। इस व्यापक यज्ञायोजन को सफल बनाने में सभी परिजनों ने अपनी-अपनी भूमिका निष्ठा से निभाई।

गायत्री चेतना केन्द्र, गुवाहाटी

पूर्वोत्तर का प्रकाश स्तंभ गायत्री चेतना केन्द्र गुवाहाटी की प्राण प्रतिष्ठा हुई

गायत्री श्रद्धा, संवेदना, सद्भावना की जननी है। जहाँ गायत्री है वहाँ सुख है, शांति है, संतोष है। जहाँ गायत्री का अभाव है वहीं कलह, अशांति का वातावरण है। इस चेतना केन्द्र की स्थापना से पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र में आद्यशक्ति माँ भगवती का प्रेरणा प्रकाश फैलेगा, विसंगतियाँ दूर होंगी, आपसी भाईचारा बढ़ेगा, भय और तनाव मिटेगा।

• डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देसंविवि

गायत्री माता की प्रतिमा और ऋषियुग्म के स्मारकों की प्राण प्रतिष्ठा करते डॉ. चिन्मय

हम गायत्री चेतना के संवाहक बनें

डॉ. चिन्मय जी ने गायत्री चेतना का पूर्वोत्तर में विस्तार कर रहे कार्यकर्त्ताओं महामनाओं का उत्साहवर्धन किया। अभीष्ट लक्ष्य में सफलता पाने का मंत्र देते हुए उन्होंने कहा-

हममें प.पू. गुरुदेव के अंग-अवयव होने का गौरव बोध और दृढ़ विश्वास होना चाहिए। जिस सुख, शांति, सम्मान को पाने के लिए समाज में हाहाकार मचा है, वह गुरुदेव की राह पर चलने वाले कार्यकर्त्ताओं को सहज ही प्राप्त हो रहा है।

हमें गायत्री चेतना को जन-जन तक पहुँचाकर देवताओं, संत, सुधारक, सत्पुरुषों की खेप समाज को समर्पित करने का लक्ष्य रखकर कार्य करना है। यह कार्य केवल शब्दों से संभव नहीं है। इसके लिए 'सादा जीवन, उच्च विचार' का सूत्र अपनाना होगा, सच्चे ब्राह्मण बनकर यह जीवन गुरुदेव के संकल्पों को पूरा करने के लिए अर्पित करना होगा।

चाय बागान के श्रमिकों का योगदान

इस महायज्ञ में चाय बागानों के श्रमिक, कुमरीकाँटा, अत्रिघाट, ठकुरियापारा के स्वयंसेवकों ने अत्यंत प्रशंसनीय योगदान दिया। यज्ञ स्थल की सफाई, समिधाएँ तैयार करना, यज्ञशाला निर्माण, भोजनालय संचालन, प्रभातफेरी निकालने, पोस्टर-बैनर लगाने में उनकी विशिष्ट भूमिका रही।

इन श्रमिकों के जीवनोत्कर्ष के प्रयास किये गये। उन्हें पढ़ना, हस्ताक्षर करना सिखाया गया। यज्ञ के दिनों में उन्होंने नशा छोड़ ही दिया, आगे भी व्यसनमुक्त रहने के उन्हें संकल्प दिलाये गये। वे अपने चाय बागानों में भी व्यसनमुक्ति अभियान चलायेंगे।

गुवाहाटी (असम)

'सेवन सिस्टर्स' के नाम से जाने जाने वाले पूर्वोत्तर भारत के प्रथम गायत्री चेतना केन्द्र, बेहारबाड़ी, गुवाहाटी में गायत्री माता की प्राण प्रतिष्ठा करने के पश्चात देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने यह संदेश दिया। इस अवसर पर पूर्वोत्तर के सभी राज्यों असम, अरुणाचल, मेघालय, मणीपुर, मीजोरम, त्रिपुरा, नागालैण्ड के लगभग 2000 कार्यकर्त्ता समारोह में उपस्थित थे।

प्राण प्रतिष्ठा समारोह 3 से 6 मार्च की तारीखों में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। इसे सम्पन्न कराने शांतिकुंज से जोन प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री कालीचरण शर्मा, सर्वश्री जितेन्द्र मिश्रा, विनय केशरी, संजय सिंह, दिलथिर यादव, सुनील बंशीधर, दिनेश मार्नदे, संतोष सिंह, नरेन्द्र पाटीदार, मनोरंजन प्रधान की टोली पहुँची थी। पूर्वोत्तर जोन प्रभारी श्री परमानन्द द्विवेदी, श्री वीरेन्द्र तिवारी, श्री विजय रावत आदि की टोली ने महीनों पूर्व पहुँचकर प्राण प्रतिष्ठा समारोह के प्रयाज एवं पूर्व तैयारियों के कार्यों का बड़ी कुशलता के साथ प्रबंधन किया।

कलश यात्रा : कार्यक्रम का शुभारंभ 1100 कलशों सहित निकाली गयी विशाल कलश यात्रा के साथ हुआ। गायत्री माता के जय-जयकारों से बेहारबाड़ी की गलियाँ गूँज उठीं। श्री कालीचरण शर्मा जी ने कलश यात्रा का स्वागत करते हुए कहा कि प्रत्येक माता सीता का रूप है। वह ममता, करुणा, सहनशीलता की प्रतिमूर्ति है।

देवपूजन-यज्ञ : गायत्री चेतना केन्द्र, गुवाहाटी के निर्माण में हजारों भावनाशीलों, भामाशाहों ने बड़ी श्रद्धा के साथ तन, मन, धन से अपनी आहुतियाँ दी थीं। सभी देवपूजन एवं यज्ञ करने के सौभाग्य पर गौरवान्वित दिखाई दिये। श्री प्रफुल्ल कुमार महन्त, असम के पूर्व मुख्यमंत्री एवं श्री भट्टाचार्य जी, वर्तमान विधायक सहित अनेक गणमान्य यज्ञ में पधारे। हजारों नगरवासियों ने भी यज्ञ करने के साथ शांतिकुंज से आयी ज्ञानगंगा में गोते लगाये।

1100 कलशों के साथ पूर्वोत्तर की शांति, समृद्धि का संदेश लेकर निकली देवियाँ

प्राण प्रतिष्ठा : प्राण प्रतिष्ठा का मुख्य कार्यक्रम 6 मार्च की ऊषावेला में डॉ. चिन्मय जी द्वारा सम्पन्न कराया गया। हजारों साधकों द्वारा किये जा रहे अखण्ड जप के बीच प्राण आह्वान, प्राण संचार जैसे भावविभोर कर देने वाले कर्मकाण्ड सम्पन्न हुए। माता के प्रथम दर्शन के समय उनका ओज और तेज अलौकिक दिव्यता का अनुभव करा रहा था।

कामाख्या शक्तिपीठ के दर्शन : गायत्री चेतना केन्द्र की प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व डॉ. चिन्मय जी स्थानीय सुप्रसिद्ध कामाख्या शक्तिपीठ तथा डाकिया स्थित ज्योतिर्लिंग भीमाशंकर के दर्शन के लिए भी गये। उनके दर्शन, पूजन के साथ विश्वशांति की प्रार्थना की।

डॉ. चिन्मय जी का स्वागत : शांतिकुंज के अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त युवा नायक डॉ. चिन्मय जी की उपस्थिति से कार्यकर्त्ता-श्रद्धालु सभी उमंग-उल्लास से भर उठे। मंच पर सर्वश्री रामशिरोमणि तिवारी, सी.के. जायसवाल, राजेश तायल, डीजीपी डॉ. अजीत रावत, बाबूलाल अग्रवाल, विमल अग्रवाल, अशोक भट्ट, देवचरण दास एवं अनेक गणमान्यों ने असमिया दुपट्टा एवं झांपी प्रदान कर उनका भावभरा सम्मान किया।

दीपयज्ञ के अवसर पर दिये संदेश में उन्होंने मानव जीवन की गरिमा पर विस्तार से प्रकाश डाला। परम पूज्य गुरुदेव, परम वंदनीया माताजी के मार्मिक संस्मरणों के साथ उनके जैसा व्यक्तित्व बनाने की प्रेरणा दी। आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं आदरणीया जीजी का संदेश दिया, जन-जन के उत्कर्ष की मंगलकामना की।

108 कुण्डीय महायज्ञ में भाग लेते लोग और सभा को संबोधित करते डॉ. चिन्मय, साथ में श्री कालीचरण शर्मा जी, श्री वीरेन्द्र तिवारी जी

अंतराष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित हुए सम्मेलन

आँवलखेड़ा में विधिक जागरूकता शिविर
न्यायविदों ने किया बहिनों का मार्गदर्शन

मंचासीन वक्तागण एडीजे 17 श्रीमती रीता सिंह, सिविल जज सीनियर डिवीजन श्रीमती कविता मिश्रा, जिला विधिक प्राधिकरण सचिव श्री रविन्द्र कुमार द्विवेदी, अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्री आशुतोष कुमार सिंह, अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट कु. पूनम त्रिवेदी सिविल जज जूनियर डिवीजन कु. नम्रता शर्मा ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट कु. शिल्पी चौहान, मेयर श्री इंद्रजीत आर्य, समाज सेविका श्रीमती सरोज गौड़

आँवलखेड़ा, आगरा (उ.प्र.)

जिला विधिक प्राधिकरण द्वारा गायत्री शक्तिपीठ, आँवलखेड़ा पर जागरूकता विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया था। अनेक न्यायविदों ने इसे संबोधित करते हुए महिलाओं को उनके कानूनी अधिकारों की जानकारी दी।

शक्तिपीठ व्यवस्थापक श्री घनश्याम देवांगन ने सतयुगी समाज के निर्माण में नारी की भूमिका के संदर्भ में परम पूज्य गुरुदेव-वंदनीया माताजी के विचार और कार्यों की जानकारी दी। इस सम्मेलन ने बहिनों बच्चियों को शिक्षा-संस्कार ग्रहण करते हुए संगठित होकर अवांछनीयता, अराजकता-आतंक से मुक्त समाज के निर्माण में सहयोग करने का आह्वान किया।

पिलानी, झुंझुनू (राजस्थान)

गायत्री चेतना केन्द्र, पिलानी पर आयोजित कार्यशाला का विषय था 'बी बोल्ड फॉर चेञ्ज'। मुख्य अतिथि बिट्स की डॉ. संजना भट्ट एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. निधि चतुर्वेदी, डॉ. हसीना खातून, डॉ. सुमित्रा सिंह, मिस चित्रा गौतम, मिस शालिनी सक्सेना आदि ने इसे संबोधित किया। उन्होंने घर और दफ्तर के कार्यों में संतुलन स्थापित करने के सूत्र और नये-नये व्यावसायिक विचारों की चर्चा की।

गायत्री परिवार प्रेज़ेण्टेशन, गीत, कविता आदि के माध्यम से परिवार, समाज और बच्चों को संस्कारवान बनाने के सूत्रों की व्याख्या की। सभा में हर वर्ग की बहिनों ने भाग लिया। उन्हें अपने बच्चों के विवाह बिना दहेज के सादगीपूर्वक कराने के संकल्प दिलाये गये। कार्यशाला आयोजन में श्रीमती मंजुला खरे, प्रेमलता सोनी, उमा शर्मा, राजकुमारी सोनी, किस्तूरी ढिल्लों, उषा चौधरी, सजना आदि का विशेष योगदान रहा।

200 पुंसवन संस्कार हुए

मांजलपुर, वडोदरा (गुजरात)

मांजलपुर शाखा ने महिला उत्कर्ष हेतु 24 कुंडीय गायत्री महायज्ञ आयोजित किया। इसमें 200 से ज्यादा पुसंवन संस्कार तथा बड़ी संख्या में मुण्डन, नामकरण,जन्म दिवस एवं विवाह दिवस संस्कार कराये गये। कार्यक्रम का संचालन ज्योत्स्नाबेन पंचाल ने किया।

उज्जैन (मध्य प्रदेश)

उपजोन उज्जैन के प्रयासों से गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन के अलावा बड़नगर, तराना, नागदा तहसील मुख्यालयों पर भी अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में विशेष सम्मेलन आयोजित किये गये। बड़नगर में नगरपालिकाध्यक्ष श्रीमती मधु शोभावत, श्रीमती ऊषा सोनी, शांति वोहरा को नगर में महिलाओं को संगठित करने के लिए सम्मानित किया गया।

दिवंगत हुई देवात्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि

श्री दिनेश साहू,
मुलताई, बैतूल (म.प्र.)

हर पल युग चेतना के विस्तार के लिए प्रयत्नशील रहने वाले प्राणवान युवा कार्यकर्त्ता श्री दिनेश साहू का 40 वर्ष की अवस्था में 27 जनवरी को देहावसान हो गया। उन्होंने 2001 से 2003 तक शांतिकुंज में अपनी सेवाएँ प्रदान की थीं।

श्री चंद्रभानु शर्मा,
जयपुर, कोरापुट (ओडिशा)

अपने सुरीले कंठ से मिशन की भरपूर सेवा करने वाले श्री चंद्रभानु शर्मा का 12 फरवरी को देहावसान हो गया। आठ भाषाओं में प्रज्ञागीत गाते हुए उन्होंने ओडिशा, छत्तीसगढ़, झारखंड और बिहार में मिशन का प्रचार-प्रसार किया।

श्रीमती नर्मदा देवी अग्रवाल,
नांदेड़ (महाराष्ट्र)

82 वर्षीया श्रीमती नर्मदा देवी 5 मार्च को गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गयीं। उनके पति श्री बनारसीदास अग्रवाल की सेवा-सक्रियता में भी उनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन का बड़ा योगदान रहा।

व्यक्ति की सबसे मूल्यवान सम्पत्ति उसका चरित्र होता है। चरित्र ही महानता की बुनियाद है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में निखर रहा है युग सृजेताओं का व्यक्तित्व

'उत्सव 2017' ने सिखाई जीने की राह, विद्यार्थियों ने परखा अपना कौशल

उत्सव-2017 में हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम और कबड्डी प्रतियोगिता

देव संस्कृति विश्वविद्याल का 15वाँ वार्षिकोत्सव 'उत्सव-2017' हर पल उमंग और उल्लास की अनुभूति कराने वाला था। 9 से 11 मार्च तक चले तीन दिवसीय कार्यक्रम में खेल प्रतियोगिताओं और सायंकाल सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। खेलों में कबड्डी, खो-खो, फुटबॉल, चेस, भाला फैंक, कैरम, बॉलीबॉल, टेबल टेनिस आदि प्रमुख रहे। कुलाधिपति एकादश एवं छात्र एकादश के बीच मैत्री क्रिकेट मैच भी खेला गया, जिसमें आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी और डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने भी भाग लेते हुए विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। खेलों के अतिरिक्त क्विज, कविता लेखन, निबंध लेखन, एकल गायन, शास्त्रीय गायन, समूह नृत्य, नाटक जैसी शैक्षिक-सांस्कृतिक दक्षता का परखने वाली प्रतियोगिताएँ भी उत्साहवर्धक थीं।

कुलाधिपति जी ने प्रथम दिन ध्वजारोहण और मशाल प्रज्वलन के साथ उत्सव 2017 का शुभारंभ किया। उन्होंने प्रत्येक प्रतियोगिता में खेल भावना बनाये रखने की शपथ विद्यार्थियों को दिलायी। अपने संदेश में उन्होंने कहा कि प्रतियोगिताएँ अपने कौशल को परखने का अवसर होती हैं, उसे बढ़ाने की प्रेरणा देती हैं। इनमें हार-जीत अनिवार्य रूप से जुड़ी होती है। हर परिस्थिति में हर पल जीवन में उमंग और उल्लास बना रहे, यही 'उत्सव-2017' का संदेश है। हार हताशा या प्रतिशोध का कारण न बने तथा जीत अहंकार न बढ़ाये, इसी में कार्यक्रम की सफलता है।

पूरे कार्यक्रम में विद्यार्थियों का उत्साह देखते ही बनता था। लगभग प्रत्येक विद्यार्थी ने इसमें भाग लिया। समापन कार्यक्रम विवि के मृत्युंजय सभागार में आयोजित किया गया था, जिसमें कुलाधिपति, कुलपति, प्रतिकुलपति, कुलसचिव सभी उपस्थित रहे। आदरणीय डॉ. साहब ने विजयी रहे छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी क्रिकेट मैच में भाग लेकर विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए

अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला : वैदिक संस्कृति के स्पर्श से गद्गद हुए मेहमान

महाशिवरात्रि की मंगल वेला में देव संस्कृति विश्वविद्यालय में 'वैदिक अध्ययन एवं योग' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित हुई। 21 फरवरी से 4 मार्च तक चली कार्यशाला में लात्विया से आये अतिथि मुख्य रूप से शामिल रहे।

अतिथियों ने पहले दिन से ही योग, यज्ञ, संस्कार आदि दैनिक क्रम में भाग लेते हुए मानवीय उत्कर्ष में अत्यंत प्रभावशाली वैदिक संस्कृति के आह्लादकारी अध्यायों का अध्ययन कर सुख अनुभव किया। उन्हें प्रज्ञायोग, पंचकर्म, प्राकृतिक चिकित्सा, एक्यूप्रेशर आदि की सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक जानकारियाँ दी गयीं। महाशिवरात्रि पर रुद्राभिषेक करते हुए विश्वकल्याण की प्रार्थना की।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के संग कार्यशाला के प्रतिभागीगण

प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अपनी विशेष कक्षा में उन्हें बताया कि आज की दुनिया का ध्यान भौतिक विकास की ओर है, जो सुविधा तो देती है पर सुखी नहीं बनाती। वैदिक संस्कृति ही वह संस्कृति है जो व्यक्ति का समग्र-शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक विकास करती है। वैदिक संस्कृति सारी दुनिया को परिवार मानती है और उसी भाव से सबका सुख और विकास चाहती है। यही संस्कृति सारे विश्व में शांति और समृद्धि स्थापित कर सकती है।

डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि भारत और लात्विया की भाषा, संस्कार व संस्कृति में बहुत सारी समानताएँ हैं, जिसके कारण हम आपके साथ विशेष जुड़ाव अनुभव करते हैं।

लात्विया दल के प्रमुख अर्निस सिलिन्स ने शांतिकुंज, देसंविवि के अनुभवों पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि हमें यहाँ जो शिक्षा-दीक्षा मिली है, वह अन्यत्र कहीं नहीं। विदाई से पूर्व दल ने आदरणीया जीजी और आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के आशीर्वाद भी लिये।

योग परीक्षकों की कार्यशाला

कार्यशाला में शामिल प्रमुख वक्ता एवं प्रतिभागीगण

योग परीक्षकों की गुणवत्ता बढ़ाने के संदर्भ में 26 फरवरी को देव संस्कृति विश्वविद्यालय में एक दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न हुई। इसमें उत्तर भारत के महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक केन्द्रों से आए चौंतीस विद्वानों ने भाग लिया। उन्हें प्रोफेशनल प्रमाण पत्र संबंधी जानकारियाँ भी प्रदान की गयीं। क्वालिटी कन्ट्रोल ऑफ इंडिया का इस कार्यशाला में विशिष्ट योगदान रहा।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलपति श्री शरद पारधी एवं गढ़वाल विकास निगम के महाप्रबंधक श्री राणा कार्यशाला के मुख्य अतिथि थे। श्री शरद पारधी जी ने कहा कि सामाजिक आवश्यकताओं के आधार पर शोधकार्य तेजी से हो रहे हैं और योग की नयी-नयी विधाएँ प्रकाश में आ रही हैं। परीक्षकों को इन सबकी जानकारी रहनी ही चाहिए।

क्वालिटी कन्ट्रोल ऑफ इंडिया (QCI) के कार्यकारी अधिकारी डॉ. टी.पी. अहलुवालिया ने बताया कि देश-विदेश में योग प्रशिक्षक बनने के लिए अब QCI की परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य है। भारतीय योग संघ के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. एस.पी. मिश्रा, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के योग विभाग के प्रो. ईश्वर भारद्वाज, पतंजलि विश्वविद्यालय से आए डॉ. एन.के. यादव ने भी प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया। देसंविवि में योग विभागाध्यक्ष प्रो. सुरेश लाल वर्णवाल ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

राज्यपाल द्वारा सम्मानित किये गये राष्ट्रीय सेवा योजना के अधिकारी एवं विद्यार्थी

उत्तराखंड के राज्यपाल महामहिम डॉ. कृष्णकान्त पॉल द्वारा राजभवन में आयोजित एक कार्यक्रम में देसंविवि के एनएसएस के अधिकारी एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

- डॉ. अरुणेश पाराशर, समन्वयक एनएसएस देसंविवि को उत्तराखण्ड के ग्रामीण क्षेत्रों में तरह-तरह के रचनात्मक कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के लिए सम्मानित किया गया।
- इस वर्ष राजपथ पर आयोजित गणतंत्र दिवस की राष्ट्रीय परेड़ में देसंविवि के राष्ट्रीय सेवा योजना के सदस्य विद्यार्थी कु. प्राची अग्रवाल, गौतम कुमार एवं मनोज कुमार ने भाग लिया। महामहिम ने उन्हें सम्मानित किया। उन्होंने विद्यार्थियों द्वारा प्रधानमंत्री कार्यालय में किये गये उत्कृष्ट प्रदर्शन की विशेष रूप से सराहना की, उज्ज्वल भविष्य के लिए विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ दीं।

महामहिम डॉ. कृष्णाकान्त पॉल एवं एनएसएस के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ सम्मानित देसंविवि के अधिकारी एवं विद्यार्थी

इस अवसर पर राज्य रा.से.यो. अधिकारी डॉ.विनोद कुमार ने देसंविवि द्वारा राष्ट्रीय एवं उत्तराखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में जनजागरूकता बढ़ाने के लिए किये जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी महामहिम को दी।इस अवसर पर हरिद्वार के जिला समन्वयक श्री. एस.पी.सिंह, क्षेत्रीय केन्द्र लखनऊ के प्रतिनिधि श्री जमुना प्रसाद एवं यूकॉस्ट से जुड़े डॉ. प्रशांत सिंह सहित देसंविवि के सदस्य उपस्थित रहे।

सेवा हमारा संस्कार है

सम्मानित विद्यार्थियों को कुलाधिपति आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय जी ने भी प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि सेवा भावना इस विश्वविद्यालय के संस्कारों में है। हमारे बच्चे हर क्षेत्र में राष्ट्र को प्रगतिपथ पर अग्रसर करेंगे।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

डिजिटल क्रान्ति ही नहीं, भावनात्मक शक्ति का विकास भी जरूरी • डॉ. चिन्मय पण्ड्या

28 फरवरी को देव संस्कृति विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया। इस उपलक्ष्य में कम्प्यूटर विभाग व यूसार्क के संयुक्त तत्वावधान में विज्ञान संबंधी जागरूकतापरक कार्यक्रम दो सत्रों में आयोजित हुए। पहले सत्र में विज्ञान से संबंधित पोस्टर बनाना, निबंध प्रतियोगिता इत्यादि हुए तथा दूसरे सत्र में नाटक आदि के माध्यम से तथ्यों के वैज्ञानिक प्रस्तुतीकरण की कला बतायी गयी।

प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या एवं कम्प्यूटर विभाग के अध्यक्ष डॉ. अभय सक्सेना ने सामयिक संदेश दिया। डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि विज्ञान तथ्यों को परखने की सामर्थ्य विकसित करता है। गायत्री साधना से जाग्रत विवेक भी साधक को वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करता है। आज के युग में वही तथ्य एवं परम्पराएँ समाज को स्वीकार्य होंगी, जो विज्ञान की कसौटी पर खरी उतरेंगी। डॉ. पण्ड्या ने कहा कि अध्यात्म और विज्ञान में सामंजस्य स्थापित होना चाहिए। डिजिटल क्रान्ति के साथ लोगों की भावनात्मक शक्ति का भी विकास होना चाहिए।

राष्ट्रीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता जीती

गुवाहाटी (असम) गायत्री विद्यापीठ, शांतिकुंज की छात्रा ईशा देवांगन और तन्मय वर्मा ने उत्तराखंड राज्य का प्रतिनिधित्व करते हुए अण्डर 19 वर्ग में राष्ट्रीय स्तर पर क्रमशः द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता का आयोजन युवा एवं खेल मंत्रालय, नई दिल्ली ने गुवाहाटी में दिनांक 20 से 24 जनवरी तक की तारीखों में किया था।

जीजी-डॉ. साहब के साथ विजेता विद्यार्थी व उनके अभिभावक

ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहन

25 जनवरी को देसंविवि में भारतीय पर्यटन दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित व्याख्यान, प्रेज़ेण्टेशन, फोटोग्राफी, क्विज़ आदि प्रतियोगिताओं द्वारा ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहन दिया गया। पर्यटन विभाग के मुख्य समन्वयक डॉ. अरुणेश पाराशर एवं डॉ. उमाकान्त इंदौलिया ने कहा कि इससे रोजगार, स्वावलम्बन, स्वच्छता, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी योजनाओं को प्रोत्साहन मिलेगा।

प्रज्ञा अभियान
1 अप्रैल 2017

मन के विकार मिटाकर जीवन को उल्लास से भरने का पर्व है होली • आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

शांतिकुंज के श्रीराम पुरम में आयोजित होलिका दहन समारोह को संबोधित करते आदरणीय डॉ. प्रणव जी, दायें- होलिका से उठती प्रचण्ड ज्वाला

शांतिकुंज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार ने अपने प्रमुख अभिभावक आदरणीया शैल जीजी एवं आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी की मुख्य उपस्थिति में होली पर्व अत्यंत उमंग-उल्लास के साथ मनाया। होलिका दहन समारोह में पर्व संदेश देते हुए आदरणीय डॉ. साहब ने होली को भक्ति की शक्ति का अहसास कराने वाला पर्व बताया। उन्होंने कहा कि प्रह्लाद ईश चेतना-आदर्शों के प्रति अटूट आस्था का प्रतीक है। अत्याचारी, अहंकारी हिरण्यकशिपु और भगवान के वरदानों का दुरुपयोग करने वाली होलिका भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकी। होली हमें अपने इष्ट पर दृढ़ आस्था रखते हुए अवांछनीयताओं से संघर्ष करने की प्रेरणा देती है।

होली के सामाजिक और वैज्ञानिक पक्ष पर प्रकाश डालते हुए आदरणीय डॉ. साहब ने भारतीय पर्वों की परम्परा को जीवन प्रबंधन का सुव्यवस्थित अध्याय बताया। उन्होंने कहा कि होली शारीरिक, मानसिक सभी प्रकार के विकारों के शमन का पर्व है। होलिका दहन से वातावरण में व्याप्त हानिकारक जीवाणुओं का नाश होता है, जिससे बीमारियों से रक्षा होती है।

रंग पंचमी अमीर-गरीब, ऊँच-नीच, लड़के-लड़की जैसे भेद दूर कर मन की मलिनता मिटाने और एकता-समता का भाव

- **नशा, अश्लीलता के विरुद्ध सशक्त आन्दोलन की प्रेरणा दी**
- **कवि सम्मेलन में भी गूँजे ठहाके**

बढ़ाने का पर्व है। उन्होंने नशा, अश्लीलता को कामुकता और तरह-तरह के अपराधों का प्रमुख कारण बताते हुए उनके विरुद्ध सशक्त आन्दोलन चलाने का आह्वान किया।

होली मिलन समारोह का शुभारंभ परम्परागत रूप से आदरणीया जीजी-डॉ. साहब द्वारा चंदन, गुलाल का तिलक लगाने के साथ हुआ। लगभग दो घंटे चले रंगोत्सव में आश्रमवासी, शिविरार्थियों ने एक-दूसरे को हर्बल गुलाल लगाते हुए मंगलकामनाएँ दीं।

सायंकाल कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था। शांतिकुंज के अंतेवासी कार्यकर्त्ताओं ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं का स्वस्थ्य मनोरंजन किया।

कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या जी देसंविवि की अमराई में आयोजित होली मिलन समारोह को संबोधित करते हुए

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में छलका अंतर्मन का उल्लास

देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार ने रंग पंचमी के दिन अमराई की शीतल छाँह में होली मिलन समारोह मनाया। कुलाधिपति आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के संग कुलपति, प्रतिकुलपति सहित समस्त अधिकारी, शिक्षक, विद्यार्थियों ने मिलकर फूलों की होली खेली। रशिया से आये मेहमानों का दल उमंग-उल्लास के इस वातावरण में शामिल होकर गद्गद हो गया।

इस होली मिलन समारोह विद्यार्थियों ने मनोविनोदपूर्ण नाटक एवं गीत प्रस्तुत किये। इनके माध्यम से उन्होंने नशा-अश्लीलता जैसी बुराइयों के शमन के लिए अपने संकल्प और उत्साह का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम स्थल हँसी के ठहाकों और तालियों से गूँजता रहा।

संयुक्त राष्ट्र संघ की संस्था ग्लोबल कोवोनेण्ट के साथ देव संस्कृति विश्वविद्यालय का अनुबंध

सभी धर्मों के प्रति परस्पर प्रेम और सम्मान बढ़ाने तथा धार्मिक हिंसा को कम करने के लिए काम करेंगे

श्री मार्कस और डॉ. चिन्मय पण्ड्या अनुबंध के दस्तावेजों का आदान-प्रदान करते हुए

संयुक्त राष्ट्र की संस्था ग्लोबल कोवोनेण्ट के साथ देव संस्कृति विश्वविद्यालय का एक अनुबंध हुआ है। इसके अनुसार दोनों विश्व में धार्मिक सद्भाव और परस्पर सम्मान बढ़ाने तथा धर्म प्रेरित हिंसा पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए शोधपरक एवं व्यावहारिक उपायों पर काम करेंगी।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की शिक्षा एवं विचारों से प्रभावित स्कूल ऑफ ओरिएन्टल एण्ड अफ्रीकन स्टडीज़, लंदन का एक दल यहाँ आया। डॉ. चिन्मय पण्ड्या, प्रतिकुलपति देसंविवि से दल प्रमुख एड मार्कस की अनेक विषयों पर चर्चा हुई। उन्होंने यहाँ की आध्यात्मिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक गतिविधियों का गहराई से अध्ययन किया। यह दल देसंविवि की मानवतावादी प्रेरणाओं और सर्वोपकारी गतिविधियों से बहुत प्रभावित हुआ। श्री मार्कस ने कहा कि यहाँ योग, आयुर्वेद, मनोविज्ञान जैसे विषयों की मूल अवधारणा को आधुनिक विज्ञान के अद्भुत समिश्रण और वैज्ञानिक दृष्टिकोणों के साथ पढ़ाया जाता है।

अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के पश्चात् डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताये वैज्ञानिक अध्यात्मवाद में ही आज के युग की समस्त समस्याओं का समाधान है। धार्मिक संकीर्णता और कट्टरता से ऊपर उठकर विश्व को जिस शांति की तलाश है, वह परम पूज्य गुरुदेव के सूत्र-सिद्धांतों में निहित है, विश्व समुदाय इनके प्रति आकर्षित भी हो रहा है। हम उन सबको साथ लेकर युग निर्माण के सूत्रों का वैश्विक विस्तार कर रहे हैं। इस दिशा में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थी सांस्कृतिक अग्रदूत की भूमिका निभा रहे हैं।

जर्मनी के विश्वविद्यालय से एमओयू.

डॉ. चिन्मय पण्ड्या एवं प्रो. एंडेऊस फेल्टडकीलर

हुमबोल्डट विश्वविद्यालय, बर्लिन (जर्मनी) की फेकल्टी ऑफ थियोलॉजी और देव संस्कृति विश्वविद्यालय के साथ शैक्षिक अनुबंध हुआ है। हुमबोल्डट विश्व विद्यालय द्वारा नियुक्त प्रो. एंडेऊस फेल्टडकीलर और देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने परस्पर चर्चा करते हुए अनुबंध का प्रारूप तैयार किया। वर्षभर के कार्यक्रमों का कैलेण्डर निर्धारित किया गया।

एमओयू के अनुसार शिक्षकों के शोधपरक भ्रमण के कार्यक्रम निर्धारित किये गये हैं। प्रत्येक वर्ष 5 विद्यार्थियों को शिक्षा हेतु एक-दूसरे के यहाँ भेजा जाएगा। यह प्रक्रिया तीन वर्ष तक चलती रहेगी एवं जरूरत पड़ने पर इसे बढाया भी जा सकता है। शैक्षणिक कार्यो के साथ ही विभिन्न सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक तथ्यों को ध्यान में रखते हुए प्रोजेक्ट कार्य को भी आगे बढाया जाएगा।

नूतन संजीवनी साधना सत्र

गाँधीनगर, अम्बाजी और गरुड़ेश्वर में भी आरंभ हुए

गायत्री शक्तिपीठ श्रीअयोध्याजी, उ.प्र.
16 से 24 मार्च एवं 28 मार्च से 05 अप्रैल

गायत्री शक्तिपीठ, गाँधीनगर, गुजरात
28 मार्च से 05 अप्रैल

गायत्री सेवा साधना ट्रस्ट, श्रीअम्बाजी, गुज.
11 अप्रैल से 19 अप्रैल

श्रीश्रद्धा साधना केन्द्र, गरूड़ेश्वर, गुजरात
21 अप्रैल से 29 अप्रैल

विशेषताएँ : साधना और शिक्षण के लिए अनुकूल दिव्य वातावरण, आरंभिक चरण में शांतिकुंज प्रतिनिधियों द्वारा प्रशिक्षण।

नोट : भाग लेने के इच्छुक परिजन अपना पंजीयन शिविर विभाग, शांतिकुंज में करायें।

- जिन शक्तिपीठों पर साधना, शिक्षण, आवास, भोजन की उचित व्यवस्था हो, वे भी इस प्रकार के शिविर आरंभ कराने के लिए शांतिकुंज के शिविर विभाग से संपर्क कर सकते हैं।

भावभरी श्रद्धांजलि

सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गयीं श्रीमती देव कुमारी श्रीवास्तव

श्रीमती देव कुमारी जी

शांतिकुंज की जीवनदानी कार्यकर्त्ता, एक सशक्त माँ, समर्पित शिष्या, सजग गृहणी श्रीमती देव कुमारी श्रीवास्तव 28 फरवरी 2017 को अपनी स्थूल काया को त्यागकर गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गयीं। शांतिकुंज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री केसरी कपिल जी की धर्मपत्नी श्रीमती देव कुमारी जी ने 80 वर्ष की उम्र में अंतिम साँस ली।

श्री कपिल जी अपनी धर्मपत्नी एवं चार बच्चे संजय, शेखर, मंजू, करुणा के संग परम पूज्य गुरुदेव के आह्वान पर सन् 1977 में ही शांतिकुंज आ गये थे। उस समय ये बच्चे क्रमशः नौ, सात, पाँच और कक्षा तीन में अध्ययनरत थे। उन दिनों श्री कपिल जी अधिकांश समय अकेले, टोली में अथवा परम पूज्य गुरुदेव के साथ टोलियों में ही रहा करते थे। ऐसे में सीमित साधनों में कठोर तपस्वी जीवन जीते हुए श्रीमती देव कुमारी जी ने जिस मनोयोग से अपने नन्हे-नन्हे बच्चों का निर्माण किया, उन्हें संस्कारवान बनाया, वह एक आदर्श है और अनुकरणीय भी।

स्वर्गीय श्रीमती देव कुमारी जी को श्री कपिल जी के साथ शोक संतप्त पूरे परिवार-बेटे, बेटी, पुत्रवधु आदि और शांतिकुंज परिवार ने भावभरी विदाई दी। 11 मार्च को दिवंगत देवात्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए गुण निवेदन सभा का आयोजन किया गया। उसमें आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, आदरणीय श्री वीरेश्वर उपाध्याय जी, श्री शिव प्रसाद मिश्रा, श्रीमती मणि दाश, श्रीमती भारती नागर और परिवारी जनों में बेटी मंजू, पुत्रवधु श्रीमती वंदना ने अनके संस्मरणों के साथ उनके समर्पण, साहस, तपस्वी जीवन को याद किया। सभी भाई-बहिनों ने उनके आत्मीयतापूर्ण व्यवहार को याद करते हुए उनकी आत्मा की शांति, सद्गति की मौन मानसिक प्रार्थना पावन गुरुसत्ता से की।

इस अवसर पर श्री केसरी कपिल जी, बेटे संजय-शेखर, बेटी श्रीमती मंजू, पुत्रवधु श्रीमती वंदना, श्रीमती नेहा सहित पूरा परिवार उपस्थित था। अपरिहार्य कारणों से बेटी करुणा उपस्थित नहीं हो सकी थी।

विशेष ज्ञातव्य

- शांतिकुंज में आवास की व्यवस्था केवल साधना शिविर, प्रशिक्षण शिविर या संस्कार सत्र में आने वाले परिजनों के लिए ही है। जो परिजन इनमें भाग लेना चाहते हैं, वे शिविर विभाग, शांतिकुंज से पूर्व स्वीकृति अवश्य लेकर आयें। संपर्क करें- ईमेल-shivir@awgp.in फोन-9258369479
- अपनी सरकारी मान्यता प्राप्त आई.डी. अवश्य साथ लायें।
- जो परिजन दर्शनार्थ या पर्यटन की दृष्टि से हरिद्वार आ रहे हैं, वे अपने आवास की व्यवस्था अन्यत्र ही करें। वहाँ रहकर भी वे शांतिकुंज की दैनिक गतिविधियों में निर्विघ्न भाग ले सकते हैं।

-: प्रमुख संपर्क सूत्र :-
पूछताछ : 09258369725
(समय प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक)
email : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार संपादन :
news.shantikunj@gmail.com
news@awgp.in

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुंज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुंज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा अंबिका प्रिंटर्स एण्ड बाइंडर्स, 656क देहराखास, पटेल नगर, इंडस्ट्रिअल एरिया, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय**
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411.
फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866

Publication date: 27.3.2017
Place: Shantikunj, Haridwar.
RNI-NO.38653/ 80
R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2015-17
LICENCE TO POST
W.O. PREPAYMENT VIDE NO.
WPP/ 04
RENEWED 2015-2017